13

अन्तिम शिक्षाएं
(13:1-25)

इब्रानियों की पुस्तक नये नियम में लेख, उपदेश और पत्री का एक अनोखा मेल है। इसके अंत में पहली सदी के पत्र की खूबियां हैं, परन्तु यह भी एक सही समापन है। इस प्रकार के समापन के लिए तकनीकी शब्द लातीनी भाषा के *peroratio* से लिया अंग्रेज़ी शब्द ''peroration'' है।[1] निष्कर्ष में लेखक या वक्ता अपने तर्कों को संक्षिप्त करके भावनाओं की ओर ध्यान दिलाता था। यह मानने का कोई कारण नहीं है इस अध्याय को बाद के किसी लेखक के द्वारा जोड़ा गया होगा।

प्राचीन जगत में, इस प्रकार का समापन, पाठकों से संदेश को मानने की अपील करने के लिए होता था। लेखक ने यह काम प्रताड़ित मसीही लोगों, अतीत के अगुओं, और मसीह के कष्ट सहने को स्मरण करके किया (आयतें 3, 7, 12)। उसके कहने का भाव था कि उसकी निष्ठा पर अकारण ही संदेह किया गया था (आयतें 18, 19)। अच्छी तरह से बनाए गए निष्कर्ष में ''मन्दिर में सेवा करने वालों के'' साथियों जैसे लोगों से जिनका नई स्वर्गीय संगति में कोई योगदान नहीं था (आयत 10), बाहरी खतरों की ताड़ना दी गई। लेखक की अंतिम शिक्षाएं शेष पुस्तक से पूरी तरह से मेल खाती हैं। पुस्तक का तार्किक भाग हमारे पीछे है, परन्तु इन बातों से पाठकों को महत्वपूर्ण बातें स्मरण दिलाकर मुख्य बातों को संक्षिप्त किया गया। यूनानी वक्ताओं का मानना था कि अच्छे प्रवचन की समाप्ति संक्षिप्त होनी चाहिए और तीन से चार मिनटों में इसका यह समापन उस शर्त को पूरा करता है।[2]

अपनी प्रस्तुति के अन्त में, लेखक ने पहुनाई करने, जेल की सेवकाई, भण्डारीपन, सेवा, कलीसिया के अगुओं के अधीन होने और प्रार्थना जैसे सामूहिक और निजी काम के विभिन्न पहलुओं को बढ़ावा दिया। उसने यहूदी मत की ''छावनी को छोड़'' देने की अंतिम अपील की और अपने प्राप्तकर्ताओं को उसकी ''शिक्षा की बात'' (13:13, 22) को सह लेने को कहा। आज मसीही लोगों के लिए इस अध्याय से बढ़कर और प्रासंगिक नहीं हो सकता। लेखक ने जोर दिया कि परमेश्वर की सेवा के लिए दूसरों की सहायता करने की पेशकश करना और उनकी सहायता करना आवश्यक है। इन भाइयों ने पहले से ही इस प्रकार की देखभाल को दिखाया था (6:10)।

प्रेम को स्मरण रखें (13:1-6)

13:1-3

[1]भाईचारे की प्रीति बनी रहे। [2]पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने में स्वर्गदूतों की पहुनाई की है। [3]कैदियों की ऐसी सुधि लो, कि मानो उनके साथ

तुम भी कैद हो; और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उसकी भी यह समझकर सुधि लिया करो, कि हमारी भी देह है।

आयत 1. भाईचारे की प्रीति बनी रहे का अनुवाद प्रसिद्ध शब्द *फिलाडेल्फिया* (''भाईचारे का प्रेम'') से किया गया है[3] और यह भाइयों और बहनों को सामान्य रूप से एक-दूसरे के लिए पाया जाने वाला स्वाभाविक प्रेम है। इस प्रकार के प्रेम की आवश्यकता पर पौलुस द्वारा (रोमियों 12:10; 1 थिस्सलुनीकियों 4:9) और पतरस द्वारा (1 पतरस 2:17; 2 पतरस 1:5-8) अक्सर जोर दिया जाता था।

यीशु ने अपने लोगों के लिए अपने प्रेम का नमूना देकर उन्हें सचमुच में भाइयों और बहनों में बदल दिया, जिससे उन्हें आपस में प्रेम बढ़ाने में सहायता मिली (यूहन्ना 13:34, 35)। उसने कहा, ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक-दूसरे से प्रेम रखो: *जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है,* वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।'' इन इब्रानी लोगों में जो अब मसीह में भाई थे, भाइचारे की प्रीति थी, परन्तु उन्हें इसको बनाए रखना आवश्यक था।

यरूशलेम में विभिन्न सम्प्रदायों के बीच बढ़ती कलह के बावजूद यहूदी होने के कारण, उनमें थोड़ी बहुत पारिवारिक भावना थी। 70 ई. में झगड़े के भयंकर परिणाम दिखाई दिए। रोमी सेना को आत्मसमर्पण करने के लिए उनके इनकार का असली कारण यरूशलेम में यहूदियों के बीच फूट ही था। भाईचारे की प्रीति यहूदी मसीही लोगों में भी कम हो रही हो सकती है।

परन्तु इन पवित्र लोगों के पिता के साथ एक होने के कारण यीशु उन्हें ''भाई'' कहने से नहीं लजाता था (इब्रानियों 2:11)। यीशु मसीह उस बड़े भाईचारे का बनानेवाला है जिसे इसके सब लोगों द्वारा पसन्द किया जाना था (1 पतरस 2:17)। बेशक, इसमें यह समझ होनी आवश्यक है कि यह भाईचारा वास्तव में क्या है। एक बार तय हो जाने के बाद, हमें इसके लोगों से प्रेम करने का प्रयास दिल से करना आवश्यक है। इन मसीही लोगों के बीच यीशु के चेलों के विश्वासी दल का भाग बनना, भाईचारे को, मंदिर को, पवित्र नगर को, और इसके धर्म को पीछे छोड़ने को तैयार होने से तय होता था।

बदलने वाले याजक यदि इब्रानियों की पुस्तक के प्रमुख प्राप्तकर्ता थे, तो व्यवस्था के सिखानेवाले होने के नाते कहीं न कहीं वे अपने भाइयों से बेहतर होंगे। जिसका अर्थ यह है कि भाइचारे की सच्ची प्रीति पाने के लिए उन्हें इस भावना को खत्म करना आवश्यक था। आदर्श रूप में, हम उन सब से जिन्हें यीशु परमेश्वर के बच्चों के रूप में ग्रहण करता है, यानी उन सब से जो विश्वास करके बपतिस्मा के द्वारा मसीह में आए हैं (गलातियों 3:26, 27), प्रेम करेंगे।

हमें उन का जो विश्वास में कमजोर हैं, विशेष ध्यान देते हुए, अपने सब भाई-बहनों से अधिक से अधिक प्रेम करने को उत्सुक होना चाहिए। विघटन का कारण बनने वाले से प्रेम करना कठिन हो जाता है; परन्तु उससे भी, इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि उसे उसके विघटन के लिए डांट भी दिया जाए और प्रेमपूर्ण संगति में वापस बुला भी लिया जाए (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:14, 15; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। भाईचारे की प्रीति इतनी मज़बूत हो कि हम एक-दूसरे के लिए मरने को भी तैयार हों (1 यूहन्ना 3:16, 17)। भाइयों का आपस

में मिल जुल कर रहना कितना अच्छा और सुखद है (भजन संहिता 133:1)! हमें चाहिए कि अपनी संगति में कमजोर लोगों की सहायता करने के अवसरों की तलाश में रहें (रोमियों 15:1, 2; गलातियों 6:10)।

भाईचारे की प्रीति के खत्म होने का गंभीर खतरा रहा होगा वरना यह आज्ञा देने की आवश्यकता न होती। लगभग 70 ई. में यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान विभाजनों और अलग-अलग धड़ों की कलह से यहूदियों के बीच प्रेम लगभग खत्म ही हो गया होगा।

अगर यह पत्र यहूदिया के चुनिंदा मसीही लोगों के एक समूह में पढ़ा जाने के लिए था, तो वह दिन आ रहा था, जब उन में फूट पड़ जानी थी। तत्काल कोई खतरा न होने पर कइयों ने घरों से भागने को तैयार होना था, क्योंकि उनका विश्वास यीशु की बात पर था जो उस ने कही थी कि वे अपने अपने घरों से भाग जाएं (मत्ती 24:15-22; मरकुस 13:14-20; लूका 21:20-24)। बेशक यही बात संगति के लिए एक परीक्षण और भाईचारे की प्रीति में रुकावट बन गई हो सकती है।

आयत 2. भाईचारे की प्रीति का एक व्यावहारिक प्रदर्शन अजनबियों की **पहुनाई करना** रहा है। मध्य पूर्व में, "पहुनाई करना" दोस्ती की विशेष पहचान थी। सताव के समयों में इसकी बहुत आवश्यकता होती थी, परन्तु दूसरों के लिए घर के दरवाज़े खुले रखना कइयों के लिए अप्रिय हो गया हो सकता है। पतरस ने इस प्रवृत्ति के खिलाफ ताड़ना दी और भाइयों से "बिना कुड़कुड़ाए" पहुनाई करने का आग्रह किया (1 पतरस 4:9)। "आरम्भिक मसीही लोगों के यह करने के लिए तैयार होने की जल्दी, गैर-मसीही पर्यवेक्षकों के लिए घृणा का नहीं तो आश्चर्य का कारण अवश्य बन गया।"[14] "पहुनाई करना" "विधवाओं में नाम लिखवाने" की एक योग्यता बन गया (1 तीमुथियुस 5:9, 10)। इन स्त्रियों ने स्पष्टतया परोपकार के कार्य करने के लिए सहायता की थी जिसके लिए उन्होंने अपने आप को योग्य दिखाया था। पौलुस ने रोमियों 12:13 में पहुनाई करने वाले होने के लिए हर किसी को आज्ञा दी।

लेखक ने बताया कि कितनों ने अनजाने में स्वर्गदूतों की पहुनाई की [थी]। क्या उसके मन में उत्पत्ति 18 और 19 वाले अब्राहम और लूत की बात थी? यह पक्का पता नहीं कि अब्राहम को कहां पर लगा कि वह परमेश्वर और स्वर्गदूतों की सेवा कर रहा था, परन्तु निश्चय ही वह अपने जीवन के उन सबसे रोमांचक दिनों को स्मरण कर सकता था (न्यायियों 6:11-24; 13:2-21 भी देखें) जब उसने इन असामान्य आगंतुकों की पहुनाई की थी। लगभग 95 ई. में, रोम के क्लेमैंट ने लिखा, "अपने विश्वास और पहुनाई के कारण [अब्राहम को] उसके बुढ़ापे में एक बेटा दिया गया था ... लूत अपनी पहुनाई और भक्ति के कारण सदोम से बच गया था।"[15] प्रेम और दया के साथ "परदेशियों" के साथ व्यवहार करने का यह नियम व्यवस्था में आवश्यक बताया गया था (लैव्यव्यवस्था 19:34)। यह "अजनबी-प्रेम" (*philoxenia*) था।

पहली सदी में पहुनाई करने का एक और कारण इतना आवश्यक था कि उस समय की सराय बहुत महंगी थीं; वे बुराई के कुख्यात केन्द्र भी थे। प्रताड़ित होकर घरों से निकाले जाने वालों को मसीही पहुनाई की बड़ी आवश्यकता थी। इसलिए कलीसिया के लोगों के लिए अपने साथी सदस्यों की पहुनाई करना आवश्यक था। आज होटलों तथा भोजनालयों के होने से हमारी ज़िम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती। पहुनाई करना एक मसीही कर्तव्य है जो मनुष्य के लिए ऐल्डर

बनने के योग्य होने में सहायता करता है (1 तीमुथियुस 3:2)। ऐल्डर की पत्नी उसे इस योग्यता को पाने में अत्यंत सहायक हो सकती है।

आयत 3. इब्रानियों ने अपने विश्वास के कारण कैद होने वाले मसीही लोगों के लिए पहले से ही अपना लगाव दिखाया था (10:32-34)। उन्हें [इन] कैदियों की केवल सुधि ही नहीं लेनी थी बल्कि ऐसे काम करना था मानो उनके साथ [वे ही] कैद हों (देखें रोमियों 16:7)।[6]

हम सब भी देह और सहभागिता [में] हैं, जो कि कलीसिया है (1 कुरिन्थियों 12:25; इफिसियों 1:22, 23)। इन पाठकों को साथी कैदियों के रूप में देखना केवल सहायता देने की आज्ञा से बढ़कर अधिक प्रभावी शिक्षा थी। सताव सहने वालों के साथ उनकी तरह ही बेड़ियों में बांधे जाने की कल्पना करना भी कितना कठिन हेागा! हम में से अधिकतर लोगों को कारावास अकल्पनीय लगता है। इसलिए, कभी कभी जेलों में जाना, शायद जेल की सक्रिय सेवकाई के भाग के रूप में, हमें यह समझने में सहायक हो सकता है कि स्वतंत्रता छिन जाने का क्या अर्थ होता है। कैदियों की "सुधि" लेने का अर्थ "उनके बारे में सोचने" से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ उन लोगों को सहायता देते रहना है।

देखभाल और साझा करने की एक भावना कलीसिया के आरम्भिक इतिहास (प्रेरितों 2:44-47) में स्पष्ट थी। यही स्वभाव नये नियम के पूरे युग में बना रहा (प्रेरितों 12:5, 12; 15:22, 25)। 1 कुरिन्थियों 12:26 को लिखते समय पौलुस के मन में उन्हीं का ध्यान होगा। रोमी कालकोठरी में बैठे, प्रेरित ने लिखा, "केवल लूका मेरे साथ है" (2 तीमुथियुस 4:11क)। उनेसिफुरुस को अत्यधिक सराहा गया था: "क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी ज़ंजीरों से लज्जित न हुआ" (2 तीमुथियुस 1:16)। "सुनहरी नियम" को मान कर हम कैदियों की देखभाल की शिक्षा को मानेंगे (मत्ती 7:12)।

13:4-6

[4]विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा। [5]तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। [6]इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि

प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा;
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।

आयत 4. लेखक ने स्पष्ट रूप से देखा कि परिवार में होने वाली कोई भी गड़बड़ पूरे समाज को प्रभावित करती है। विवाह केवल "कागज का टुकड़ा" नहीं है। परमेश्वर ने स्वयं इसे ठहराया है। उसे तलाक से घृणा है (मलाकी 2:15, 16)। परमेश्वर धर्मी घरों को चाहता है क्योंकि उनके बच्चे धर्मी होंगे।

हमारे आस पड़ोस के संसार के मानक हमारे मानकों से अलग हैं। इक्कीसवीं सदी के अपने संसार में, हम विवाह और परिवार को नष्ट करने के लिए ठोस प्रयास को देखते हैं। मसीही लोगों

को, इन आयतों के साथ मेल खाते हुए, बाइबल के अनुसार परिवार के प्रबन्ध के लिए विशेष सम्मान रखना चाहिए।

भाईचारे की प्रीति बनाए रखने और समाज की भलाई के लिए विवाह की कस्मों की पवित्रता और निष्ठा आवश्यक हैं। वास्तव में, सभ्यता की सफलता के लिए इन शपथों को पूरा करना आवश्यक है। विवाह के बंधन के साथ पवित्रता जुड़ी हुई है। विवाह सब में आदर की बात समझी जाए का आम तौर पर अनादर किया जाता है। यह कह कर कि ''जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे'' (मत्ती 19:6ख) यीशु ने इस पर फिर से ज़ोर दिया। इसे न माने जाने के गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

हम इस बात को कभी न भूलें कि कस्में तोड़ना एक पाप है जिसकी परमेश्वर निंदा करता है। वह सब दोषियों को दण्ड देगा। (देखें नीतिवचन 7:6-27.) परमेश्वर को न मानने वालों और बाइबल को पुराने ढंग की किताब मानने वालों के लिए इसका कोई मतलब नहीं है। लोगों को परमेश्वर के वचन और उसके नियमों के मूल्य को समझाने से पहले हमें मसीहियत के सबूत देने आवश्यक हैं।

बिछौना निष्कलंक रहे इस बात का सुझाव देता है कि विवाह को यौन सम्बन्ध के एकमात्र संदर्भ में रूप में ही विवाह को सम्मान न देने पर यह मिलन अशुद्ध हो जाता है। लेखक ने इस नियम को तोड़ने वाले दो समूहों का नाम लिया। पहले व्यभिचारियों (''वेश्यागामियों''; KJV) का नाम है। *Porneia* से लिया गया यह शब्द *pornos* एकवचन संज्ञा है। यही वह कृत्य है जो तलाक को सही ठहराता है (मत्ती 5:32; 19:9)।

Porneia शब्द में किसी वेश्या या अनैतिक व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले काम हो सकते हैं, जैसे समलैंगिक व्यक्ति के काम। इसमें ''व्यवस्था द्वारा वर्जित सीमा के भीतर मिलनों सहित, कई प्रकार की यौन अनियमितताएं आ जाती हैं।''[7] सही-सही दावा नहीं किया जा सकता कि ''यीशु ने समलैंगिक प्रथाओं की सहमति को कभी गलत नहीं कहा।'' *Porneia* अविवाहित लोगों के बीच या विवाहित व्यक्ति के अपने पति/अपनी पत्नी को छोड़ किसी के भी बीच संभोग के साथ साथ कुकर्म सहित, कई यौन अनियमितताओं के लिए लागू होता है। इस शब्द के द्वारा समलैंगिक सम्बन्धों की निंदा की गई है।[8]

व्यभिचारियों (*moichos* से) विवाह की अपनी कस्मों को तोड़ने वालों का पता देता है। व्यभिचार विवाह के बंधन में पति-पत्नी दोनों में से किसी एक के द्वारा की गई बेवफाई है। यह विवरण सहायक हो सकता है: ''आम तौर पर, कहा जा सकता है कि हर प्रकार का व्यभिचार फोर्निकेशन है परन्तु हर प्रकार का फोर्निकेशन व्यभिचार नहीं है।''[9]

आयत 4 ''विवाह के बंधन को तोड़ने के विरुद्ध एक स्पष्ट ताड़ना है। इस सम्बन्ध को हल्के से लेने वाले लोग मनुष्य के न्याय से तो बच सकते हैं, परन्तु अपश्चात्तापी रहने पर, वे परमेश्वर के न्याय से बिल्कुल नहीं बचेंगे।''[10] 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8 में, पौलुस ने घोषणा की कि इस अपराध का दोषी ''मनुष्य को नहीं परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।'' यदि हमारे अन्दर पवित्र आत्मा है तो यह आवश्यक है कि हम ''पवित्र'' जीवन बिताएं जो किसी भी प्रकार की यौन संकीर्णता को नहीं रहने देगा। तन और मन से मसीह के द्वारा शुद्ध किया गया व्यक्ति यदि व्यभिचार करता है तो, वह अपने जीवन में मसीह के हर काम

के विरुद्ध जाता है (1 कुरिन्थियों 6:15-20)।

पवित्रता के इस रास्ते पर चलने के लिए बड़ा प्रोत्साहन यह स्मरण रखना है कि परमेश्वर ... न्याय करेगा। प्रत्येक और हर अपश्चात्तापी फोर्निकेटर, या व्यभिचारी परमेश्वर के सामने दुख भोगेगा! न्याय के लिए एक दिन ठहराया गया है, इसलिए सब को यह स्मरण रखने की आज्ञा है कि परमेश्वर अब पश्चात्ताप न कर पाने की विफलता को नजरंदाज नहीं करता है (प्रेरितों 17:30, 31)। एक पापी इस जीवन में गम्भीर परिणामों से बच सकता है, परन्तु मृत्यु से पहले परमेश्वर सब कुछ ठीक नहीं करता है।

उस समय की सरायों के साथ जुड़ी बुराई के कारण पहुनाई करने की चर्चा के बाद यह ताड़ना देना उपयुक्त था। शुद्ध और पवित्र "बिछौना निष्कलंक" तभी है जब विवाह वैसा है जैसा इसे होना चाहिए। परमेश्वर की ओर से विवाह को तब भी पवित्र मानता है जब कोई किसी नास्तिक से विवाह कर लेता है (1 कुरिन्थियों 7:13, 14)।

आयत 5क. अब तक हमने वास्तविक मसीही जीवन के चार सूचकों को देखा है। आयतें 5 और 6 में दिया गया पांचवां सूचक लालच के बजाय संतुष्टि की खूबी है। हर युग और हर जगह लोगों द्वारा किए जाने वाले दो पाप अनुचित यौन इच्छाएं (आयत 4) और धन का लोभ (आयत 5क) ही रहा है।

बहुतेरे सांसारिक लोगों के एजेंडे में सब से ऊपर भौतिक धन और यौन सुख होता है। दोनों बुराइयों का आपस में गहरा नाता है, क्योंकि भौतिकवाद और अनैतिकता दोनों ही असंतोष के पाप हैं।

आयत का आरम्भ तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो की ताड़ना के साथ होता है। "लोभ" के लिए शब्द *aphilarguros* नये नियम में और कहीं केवल 1 तीमुथियुस 3:3 में मिलता है। "लोभ" की बात करते हुए पौलुस अवैध यौन इच्छा या माया से प्रेम की बात जोड़ सकता था।[11] इफिसियों 5:3 में वह धन के "लोभ" से यौन अपराधों की बात वैसे ही करने लगा जैसे लेखक ने यहां पर की। धन और संतोष की शिक्षा 1 तीमुथियुस 6:6-10 के साथ पूर्ण पूरी तरह से मेल खाती है।

उधार और जुआ व्यक्ति को असंतोष दिलाते हैं। दोनों ही गरीबी में डुबो देते हैं। "धन का लोभ" तब साफ़ पता चलता है जब इसे पाना ही जीवन का लक्ष्य होता है।

संतुष्टि पाने का एकमात्र ढंग "स्वभाव लोभरहित" होना है। धन की इच्छा या लोभ को आम तौर पर गलत कहा जाता है।[12] यीशु ने परमेश्वर और धन की सेवा करने के असंभव होने की ताड़ना दी (मत्ती 6:24)। उसके द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द (*mamōnas*) अनिश्चित मूल का है। इस शब्द के इब्रानी रूप "धन," "संपत्ति," "दौलत," "सांसारिक वस्तुओं," या "लाभ" के लिए था। वास्तव में, धन का मोह बहुत से पापों का कारण बनता है (1 तीमुथियुस 6:10)। भौतिकवाद चिंता का कारण बनता है (देखें मत्ती 6:26-33), और चिंता संतोष का उलट है। इसका अर्थ यह है कि चिंता के विरुद्ध अपनी शिक्षा देने से पहले "माया" (KJV) की सेवा न करने की यीशु की ताड़ना मिलना स्वाभाविक है।

यीशु ने यह ताड़ना भी दी, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखे; क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता" (लूका 12:15)। हम

यह भूल जाते हैं जब हम पूछते है कि कोई कितना ''लायक'' है, हमारे कहने का मतलब होता है कि ''उसके पास कितना पैसा है ?''[13] लालच व्यक्ति को कभी खुशी नहीं दे सकता क्योंकि यह संतोष का उलट है। पौलुस ने कहा कि अपने सबसे बड़े लक्ष्य के रूप में माया के पीछे भागने वाले लोग ''बर्बादी और विनाश'' में डूब जाएंगे (1 तीमुथियुस 6:9)। इसमें गोबर के अन्दर डूबकर, दलदल में फंस जाने वाले व्यक्ति की तस्वीर है।

आयत 5ख. धन के लोभ पर काबू यह समझकर कि प्रभु कितना निकट है जो [हमारे] पास है, उसी पर सन्तोष करके पाया जाता है। जब हम मानते हैं कि प्रभु हमारी परवाह करता है तो हम अपनी आर्थिक सहायता के लिए चिंतित क्यों हों ?

''सन्तोष'' (*arkeō*) होने का अर्थ ''अचूक सामर्थ'' पाना, या पर्याप्त आहार पाना है जिससे कोई ''संतुष्ट'' हो।[14] फिलिप्पियों 4:11 में पौलुस द्वारा इस संज्ञा की सजातीय क्रिया का इस्तेमाल किया गया, जहां ''आत्म'' के लिए उपसर्ग ''आत्म-निर्भर'' के अर्थ का कारण बनता है। स्तोइकियों का मानना था कि मनुष्य को अपने आप में संतुष्ट होना चाहिए, परन्तु पौलुस का विचार था कि संतुष्टि केवल मसीह में पाई जा सकती है। उसमें यह खूबी मसीह पर निर्भरता के कारण थी न कि केवल उसकी उपनी शक्ति के द्वारा। ''सन्तोष'' का अर्थ केवल संतुष्ट होने से बढ़कर है, क्योंकि इसमें परमेश्वर पर निर्भरता शामिल है, जो हमारी हर आवश्यकता को पूरा करता है। मत्ती 6:33क लालच और चिंता पर काबू पाने के लिए एक ढंग का सुझाव देता है कि ''पहले ... परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो।''

आयत 5ग. परमेश्वर भक्ति का संतोष परमेश्वर की कही बात से ही मिलता है। एक दोहरे नकारात्मक में उसने घोषणा की,[15] कि वह हमें कभी छोड़ेगा नहीं: ''मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।''[16] इस सुंदर बात को सचमुच में कहा जा सकता है, ''मैं तुझे कभी नहीं छोडूंगा, नहीं, कभी नहीं, तुझे कभी भी नहीं छोडूंगा।''[17] केनथ वुएस्ट ने यह संक्षिप्त व्याख्या दी: ''नहीं छोडूंगा, मैं नहीं छोडूंगा, मैं तुझे नीचे नहीं लगने दूंगा, तुझे बेसहारा न छोडूंगा, मझधार में न छोडूंगा, तुझे निराश और असहाय न छोडूंगा।''[18] यह आयत अपने बच्चों के लिए परमेश्वर के सक्रिय प्रेम के कई आश्वासन देती है। हम चाहे कई बार उसे छोड़ दें, पर हमारा स्वर्गीय पिता, हमें कभी नहीं छोड़ता है।[19]

आयत 6. इसीलिए हम दिलेरी से कह सकते हैं: इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि ''प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?'' यह हवाला यहोशू 1:5, व्यवस्थाविवरण 31:6, और भजन संहिता 118:6 से लिया गया है,[20] जो कि मसीहा से जुड़ा भजन है (1 इतिहास 28:20 भी देखें)। मत्ती 21:42 में इसे मसीह के द्वारा और प्रेरितों 4:10, 11 में पतरस द्वारा किया गया था। इसका अर्थ यह है कि स्वयं मसीह द्वारा ये शब्द कहे गए; उसका आत्मा नबियों में था (1 पतरस 1:10, 11)। पुराने नियम को मसीही पवित्रता और भक्तिपूर्ण जीवन की आवश्यक बातों का समर्थन करने के लिए इब्रानियों की पुस्तक में ही नहीं, बल्कि पूरे नये नियम में बार-बार उद्धृत किया गया है। हमें इसके नियमों को कम नहीं आंकना चाहिए। परमेश्वर पर भरोसा रखकर और निर्भर रहकर ही हम धन के लोभ पर काबू पाना और संतोष करना सीख सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि पवित्र लोगों को जीवन में अपनी स्थिति में सुधार करने या दूसरों को अपनी स्थिति बेहतर बनाने में सहायता करने का कोई प्रयास

नहीं करना चाहिए। परन्तु, हमें चाहिए कि और अधिक भलाई करने के लिए (इफिसियों 4:28), न केवल इसे जमा करने के लिए, प्रयास करें। हर किसी को अपना निर्णय स्वयं करना होगा कि धन और सम्पत्ति के प्रति उसका व्यवहार परमेश्वर के मानक से कैसे मेल खाता है। भौतिक वस्तुओं की ललक आम तौर पर अभाव के एक भय के कारण होता है जो विश्वास की कमी का संकेत होता है।[21]

आयत 6 में परमेश्वर को हमारा ''सहायक'' (*boēthos*) कहा गया है; परन्तु 2:18 में हम अपने महायाजक के रूप में यीशु को भी अपने ''सहायक'' के रूप में देखते हैं। LXX में भजन संहिता (118:6, 7) में उद्धृत परमेश्वर पिता के लिए नाम ''यहोवा'' है, परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में *kurios* शब्द का प्रयोग किया गया है। नये नियम में यह शब्द आमतौर पर मसीह को दर्शाता है। इब्रानी भाषा का पुराना नियम पढ़ने में, यहूदी लोग *YHWH* (''याहवेह'') के बजाय *'adonay* (''प्रभु'') का इस्तेमाल करने लगे थे। मेसोरी लोगों ने बाद में "Yahveh" के नाम में *'ᵃdonay* के लिए स्वर चिह्न डाल दिए जिससे परमेश्वर के नाम का उच्चारण करके इस प्रकार से व्यर्थ में न बोलें। वे सार्वजनिक रूप से परमेश्वर का नामक बोलने की हिम्मत नहीं करते थे, परन्तु इसके स्थान पर ''प्रभु'' का इस्तेमाल करते थे। ईश्वरीय नाम के लिए उनके मन में ऐसी श्रद्धा थी।

ऐसा सहायक होने पर, मनुष्य हमारा क्या कर सकता है? सच में, मनुष्य हमारे साथ बहुत कुछ कर सकता है। हम व्यंग्य, गालियों, तानों, कड़वे बोलों, या शारीरिक शोषण के शिकार हो सकते हैं; कालांतर में शहीद होने वालों की तरह हमें भी शहीद किया जा सकता है। हालांकि, इन गालियों से कोई भी परमेश्वर की अति भलाई में या अपने लोगों को महिमा में लाने की प्रतिज्ञा में मसीही व्यक्ति के विश्वास को हरा नहीं सकता (2:10)। ''तात्पर्य यह है कि परमेश्वर दूसरों के हाथों प्रताड़ित होने से अपने लोगों को छूट नहीं देता, बल्कि कष्ट के द्वारा उन्हें अनन्त जीवन तक लाता है (2:10; 5:7–10)।''[22]

हमें चाहे लग सकता है कि हमें छोड़ दिया गया है, परन्तु हमें कभी छोड़ा नहीं जाता। हमारा परमेश्वर हमें देखता रहता है, परन्तु उसने हमें शारीरिक हानि से बचाने का वादा नहीं किया है। यीशु को ऐसा वायदा मिला था (मत्ती 4:6; देखें भजन संहिता 91:11, 12), परन्तु उसके लिए भी क्रूस पर मरने का समय आया था। प्रभु ने हमें केवल आत्मिक हानि से दूर रखने का वायदा किया है। जब तक हम अपने आज्ञाकारी विश्वास को बनाए रखते हैं, तब तक कोई भी चीज़ हमें परमेश्वर के प्रेम दूर नहीं कर सकती (रोमियों 8:35–39)।

मसीह में कुछ यहूदी परिवर्तित विश्वास में कमजोर थे और उन्हें प्रभु को छोड़ देने का दबाव लगा। यदि वे परीक्षा के आगे झुकने के कगार पर थे और उन्हें आवश्यकता के आश्वासन तो हम भी हैं। उनकी तरह, हमें पड़कर गिर जाना भजनकार द्वारा दिखाया विश्वास पाने की कोशिश करनी चाहिए।

पिछले अगुओं और अपने महायाजक को स्मरण रखो (13:7-16)

13:7

[7]जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उसके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।

आयत 7. छठी और अंतिम विशेषता जो मसीही व्यक्ति में होनी चाहिए, दी गई है। लेखक ने कलीसिया में अपने अगुओं का अनुसरण करके और अपने सामने तीन आदेशों को रखकर अपने पाठकों से उन्हें सम्मानित करने के लिए आग्रह किया।

यहां बताए गए अगुवे लालची विद्रोही नहीं थे। उनके जीवन इब्रानियों के लिए वफ़ादारी के अच्छे उदाहरण थे। उनके चाल-चलन का अन्त देखने से अभिप्राय है कि इसके लिखे जाने के समय वे मर चुके थे। या तो उन्हें प्रकाशन मिला था कि वे स्वर्ग में जाने में थे, या उनके शाश्वत गंतव्य का उनके जीवन से स्पष्ट हो गया था। स्थिर रहने वाले मसीही लोगों को उन्हें स्मरण रखना था या उन्हें "स्मरण रखे रखना" था (यूनानी भाषा में काल की आवश्यकतानुसार), जो सुझाव देता है कि वे उन पूर्व अगुओं के चरित्र पर ध्यान दें। 2 तीमुथियुस 2:8 में पौलुस द्वारा उसी क्रिया का इस्तेमाल किया गया जिसमें "यीशु मसीह को स्मरण" रखने की ताड़ना है। हम भी विश्वासी भाइयों और बहनों के स्मरणों को संजो सकते हैं जिनके चरित्र का अनुसरण करने की हमें कोशिश करनी चाहिए।

अगुवे शब्द के रूपों (*hēgeomai*, "अगुआई करना" या "अधिकार के साथ आज्ञा देना") का इस्तेमाल इस अध्याय में तीन बार किया गया है (देखें आयतें 17, 24)। यह एक सामान्य शब्द है जो इस बात को असम्भव बना देता है कि किस कार्यालय या किस प्रकार के अगुओं की बात की गई है। एक ही मूल से लिए गए शब्दों का अनुवाद "अगुवे" और "अधिपति" (मत्ती 2:6) और "हाकिम" (प्रेरितों 7:10) हुआ है। इसलिए, *hēgeomai* उस प्रभाव की बात करता है जो केवल नमूना देकर अगुआई करने से अधिक मजबूत है।

प्रेरितों के अलावा, आयत 7 उन सुसमाचार प्रचारकों की बात हो सकती है जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है। प्रचार करने की जिम्मेदारी तीमुथियुस को दी गई थी, और उसका कर्तव्य "सुसमाचार प्रचारक का काम" करना था (2 तीमुथियुस 4:2, 5)। ऐल्डरों को भी इसमें मिलाया जा सकता था क्योंकि कुछ लोग "वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते" थे (1 तीमुथियुस 5:17)। "वचन" में पूरा सुसमाचार संदेश आ जाता है।

इस ताड़ना के प्राप्तकर्ता परमेश्वर द्वारा नियुक्त कलीसिया के अतीत के या सम्भव तौर पर वर्तमान अगुओं के प्रति उचित सम्मान नहीं दिखा रहे होंगे। अधिकार का अनादर गंभीर पाप है। आवश्यक नहीं है कि ये इब्रानी लोग अपने अगुओं के विरुद्ध बुड़बुड़ा रहे हों, परन्तु वे विश्वास से बह कर दूर जा रहे थे (2:1-4)। जो भी हो, अपने व्यवहार से वे गंभीर खतरे में थे। उन्हें यह स्मरण दिलाना आवश्यक था।

आयतें 17 और 24 उन अगुवों की बात करता है जो इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के समय जीवित थे। आयत 7 सम्भवतया प्रेरितों, प्राचीनों, और शायद प्रेरितों 8:1-4 वाले सताव के कारण यरूशलेम में रह जाने वालों का संकेत थी। वे वहीं रहे थे जबकि कलीसिया के कई लोग भाग गए थे। इस कारण पौलुस के परिवर्तित होकर वापस लौटने और स्थिति शांत होने पर वहां

कलीसिया होनी थी (प्रेरितों 9:31)। हाबिल के जीवन की तरह ही उनके जीवन भी वफ़ादारी से बने रहने की बातें स्पष्टता से कहते हैं (इब्रानियों 11:4)।

आरम्भिक कलीसिया के अगुवे वे लोग थे, जिनके द्वारा पहले वचन की पुष्टि हुई थी (2:3), और जो मरने तक विश्वासयोग्य थे।[23] जिस कारण, पाठकों को उनकी वफ़ादारी और "उनके व्यवहार के परिणाम" को स्मरण करना आवश्यक था, जो मृत्यु के बाद के उनके प्रतिफल की व्यंजना है। देखकर के लिए शब्द "सतही समीक्षा का बिलकुल विपरीत" है।[24] भाइयों को इन अगुओं के जीवन को ध्यान से सोचना आवश्यक था कि किस प्रकार से वे अनुकरणीय थे, और अनंत काल में उनके लिए इसका क्या अर्थ था। "परिणाम," "परिणाम," या "अंत" (*ekbasis*) के लिए शब्द नये नियम में केवल 1 कुरिन्थियों 10:13 में मिलता है जहां इसका अनुवाद "बचने का ढंग" या "निकास" किया गया है। जीवन की हर परिस्थिति से निपटने में हमें परमेश्वर के ढंग को देखना आवश्यक है। 13:7 संदर्भ में, *ekbasis* ऐसे विश्वासी के अंतिम परिणाम की ओर संकेत करता है।

जब हम पूर्व अगुओं के बारे में सोचते हैं, जो मरने तक विश्वासी रहे थे, तो उनकी आत्मा की कोई बात हमारे साथ मिलकर हमें बेहतर मसीही बनाती है। पवित्र शास्त्र में विश्वास के महान नायकों के जीवन को पढ़ने और जानने का यह अच्छा कारण है। निजी तौर पर विश्वासी और परमेश्वर का भय मानने वालों की स्मृति का उनसे जिनके बारे में हमने केवल पढ़ा या दूसरों से सुना है, हम पर अधिक प्रभाव हो सकता है।

यहां बताए गए अगुओं ने अपने आश्वासन को आरम्भ से अंत तक थामे रखा था (3:14)। इब्रानियों को उनके विश्वास का अनुकरण करने को कहा गया था। "अनुकरण" (*mimeomai* से) 1 कुरिन्थियों 11:1 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द "अनुकरण करो" का एक आत्मीय है। इससे, जैसा कि आसानी से देखा जा सकता है, हमें नकल करने के लिए "imitate," "mime," और "mimic" सहित अंग्रेज़ी भाषा के कई शब्द मिलते हैं।

"उनके विश्वास का अनुकरण" करने का क्या अर्थ है? शायद, लेखक मसीही लोगों को प्रोत्साहित कर रहा था कि वे याद करें कि इन अगुओं का जीवन और मृत्यु किस प्रकार मसीह की शिक्षाओं के साथ मेल खाता था। बिना किसी संदेह के उनकी आराधना और प्रतिदिन की गतिविधियां इफिसियों 4:5 वाले "एक ही विश्वास" अर्थात उस डॉक्ट्रिन/शिक्षा के आधार पर थीं जिसे माना जाना आवश्यक है।[25] मसीही लोगों के मानने के लिए यह अच्छा उदाहरण है।

कहते हैं कि अनुसरण करना प्रशंसा करने का उच्चतम रूप है। एक युवा प्रचारक के रूप में, मैं कुछ भाइयों का अनुसरण करने की कोशिश करता था जिनके लिए मेरे मन में आदर होता था। धीरे-धीरे मैंने उनमें से कइयों की शैली को अपना ही बना लिया। मसीह का अनुसरण करने का अर्थ (1 कुरिन्थियों 11:1) अपने प्रभु को सबसे बड़ा सम्मान जो हम दे सकते हैं, देना है।

13:8-16

[8]यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। [9]नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उस खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखने वालों को कुछ लाभ न हुआ। [10]हमारी एक ऐसी वेदी है,

जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। [11]क्योंकि जिन पशुओं को लोहू महायाजक पाप-बलि के लिए पवित्र स्थान में ले जाता है, उसकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती हैं। [12]इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दुख उठाया। [13]सो आओ, उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। [14]क्योंकि यहां हमारा कोई स्थिर रहने वाला नगर नहीं, वरन हम एक अपने वाले नगर की खोज में हैं। [15]इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें। [16]पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।

आयत 8. इब्रानियों की पुस्तक में यह आयत सम्भवतया सबसे प्रसिद्ध है: यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। नामी पूर्व अगुओं की पीढ़ियों की मौत हो चुकी है परन्तु हमारे पास एक है जो जीवित है, जो सेवा करने और हमारी सहायता करते रहने को जीवित है, जबकि वे ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकते। इब्रानियों 1:12 में भजन संहिता 102:27 के शब्द उस पर लागू होते हैं: ''पर तू वही है पर तेरे वर्षों का अन्त न होगा।''

पुराना नियम ऐसी बातें परमेश्वर के लिए कहता है: ''मैं यहोवा, जो सबसे पहला, और अन्त के समय रहूंगा; मैं वही हूं'' (यशायाह 41:4; देखें 44:6)। इब्रानियों की पुस्तक में यहां वही शब्दावली मसीह के लिए लागू की गई है। इसमें कोई असंगति नहीं है, क्योंकि मसीह सचमुच में ''प्रथम और अन्तिम'' है (प्रकाशितवाक्य 1:17)। वह हमारे लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है (इब्रानियों 7:25)। उसका अनन्त स्वभाव उसके परमेश्वर होने की पुष्टि करता है।

पृथ्वी पर रहने के समय मसीह ने थोड़ी देर के लिए अपने आपको अधीन किया था (फिलिप्पियों 2:6-8); परन्तु अब उसे स्वर्ग में ''अत्यन्त ऊंचा'' किया गया है। वह हमेशा से वही है, चाहे हमेशा एक ही रुतबा उसने नहीं लिया। उसके देहधारी होने की स्थिति स्पष्टतया स्वर्ग में उसकी स्थिति से कम थी। स्वर्ग में किसी समय वह ''धनी'' था परन्तु मनुष्य के साथ मिलने और दुख सहने के लिए वास्तव में निर्धन बनकर उसने वह त्याग दिया (2 कुरिन्थियों 8:9)। अब वह ''स्वर्ग में हमारा आदमी'' है।[26] पृथ्वी पर रहते हुए ज्ञान में उसे सीमित किया गया था जिसे उस समय का पता नहीं था जो पिता ने उसके द्वितीय आगमन के लिए ठहराया है (मत्ती 24:36; मरकुस 13:32)।[27]

आयत 9. यदि हम आयतें 8 और 9 को मिला दें तो इसका अर्थ यह होगा कि हमें उसी शिक्षा को मानना पड़ेगा, और आने वाले हर नये विचार से हम बदलेंगे नहीं। यीशु का उद्देश्य और शिक्षा वही रहती है। सही ढंग से समझाए जाने पर मसीह की हमारी शिक्षा भी वही रहनी चाहिए। वह अपने वचन की सच्चाई से हिलता नहीं है, इस कारण हमें भी इसे मानने से बदलना नहीं चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)। आयत 9 की शिक्षा आयत 9 वाली की बात की स्वाभाविक आगे की कार्यवाही है।

मसीही इतिहास में इतने पहले ही नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों (बहुवचन) की समस्या थी। हमें चाहिए कि ''उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए'' न

जाएं (इफिसियों 4:14)।[28] ''ऊपरी'' का अनुवाद *xenos* से किया गया है जिसका अर्थ है ''विदेशी।'' हमें सुसमाचार के लिए ''बाहरी'' हर बात का इनकार करना आवश्यक है। मसीह वही रहता है, इस कारण इब्रानी मसीही लोगों के लिए आवश्यक था कि वे अपने मनों को परमेश्वर के अनुग्रह और मनुष्यजाति को छुड़ाने के ढंग के उसके संदेश के बारे में न बदलने दें। 'मसीह की शिक्षा' एक ही है और पाप से मुक्त होने के लिए हमें इसी को मानना आवश्यक है (रोमियों 6:17, 18)।[29]

परमेश्वर की आज्ञाएं चाहे कितनी भी बदल जाएं परन्तु यीशु नहीं बदलता। व्यवस्था में कुछ खाने की वस्तुओं के खाने या न खाने की शर्तें थीं। इन आज्ञाओं को वफ़ादारी से मानने वाले व्यक्ति को ''शुद्ध'' माना जाता था; इन नियमों को नज़अन्दाज़ करने वालों को ''अशुद्ध'' माना जाता था। आज वे नियम लागू नहीं होते। अन्यजातियों के भी खाने पीने के विशेष नियम थे।[30] परन्तु मरकुस 7:19 में यीशु ने खाने पीने की सब वस्तुओं को शुद्ध घोषित कर दिया। कुछ भोजन वस्तुओं को खाने या न खाने के पुराने हो चुके नियमों को मानना हमें अच्छे मसीही नहीं बनाता। प्रभु चाहे वहीं रहता है परन्तु उसके नियम बदल सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि नई वाचा में उसके नियमों को बदला जा सकता है। कलीसिया के रूप में बाइबल के नियमों और निर्देशों को बदलने का मत देने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

''नाना प्रकार के और ऊपर उपदेश'' क्या थे यह स्पष्ट नहीं किया गया। परन्तु हम जानते हैं कि यहूदीवादियों को इस शिक्षा की बड़ी आवश्यकता थी। वे अन्यजाति मसीही लोगों को खतना करवाने और केवल कोशर भोजन खाने के लिए दबाव डालने की कोशिश कर रहे थे (गलातियों 5:2-6)। परमेश्वर का राज्य वास्तव में खाने पीने के नियमों में नहीं मिलता है (रोमियों 14:17; 1 कुरिन्थियों 8:8)।

हम परमेश्वर के अनुग्रह से दृढ़ होते हैं न कि खाने-पीने के नियमों से। हमारा आत्मिक कद ''अनुग्रह'' से बढ़ता है न कि ''खाने की वस्तुओं'' से। व्यवस्था की बातों को सुसमाचार की बातों से बढ़कर मानना यीशु मसीह के महत्व को कम करता है, जो ''कल और आज और युगानयुग एक सा है।'' व्यवस्था की कुछ बातें अब बेकार हैं क्योंकि नये नियम में वे लागू नहीं होती हैं।

आयत 9 में ''अनुग्रह'' परमेश्वर द्वारा दी गई वास्तविक शिक्षा के लिए ही होगा। ''अनुग्रह से दृढ़'' होना हमें झूठी शिक्षा से दूर रखेगा। इब्रानियों के पूर्वजों ने परमेश्वर के ''स्वर'' को न सुनकर अपने मनों को कठोर किया था (भजन संहिता 95:7-9; इब्रानियों 3:7-11, 15; 4:7), परन्तु उनकी संतान परमेश्वर के वचन के द्वारा दी आवाज को सुनकर ''अनुग्रह से दृढ़'' हो सकते थे। तीतुस 2:11, 12 हमें बताता है कि ''परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है और हमें *चेतावनी* देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।'' अनुग्रह वह सच्चाई है जिसे सिखाना हमारे लिए आवश्यक है। ''अनुग्रह से उद्धार'' को समझना मसीही जीवन की सबसे बड़ी बात है; हम अपने खाने या खाने से इनकार करने से इसे गंवा नहीं सकते।

मत्ती 6:16-18 को ध्यान में रखते हुए ख्याति पाने की इच्छा या लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचे बिना उपवास अच्छा और स्वस्थ है। कुछ शारीरिक बीमारियों वाले लोगों को उपवास नहीं रखना चाहिए। शायद इसी कारण नया नियम कहीं भी उपवास को आवश्यक नहीं बनाता है। विशेष

आत्मिक कारणों से किया जाने के कारण यह लाभकारी है, परन्तु स्वेच्छा से ही होना चाहिए।

आयत 10. सम्भवतया मसीही यहूदी बलिदानों में भाग लेने के अधिकार से इनकार किए जाने के कगार पर थे। इससे विशेषकर वे याजक प्रभावित हुए होंगे जिन्होंने यीशु को मसीहा मानकर उस पर विश्वास किया था (प्रेरितों 6:7)। यह सोचने के बजाय कि उन्हें छोड़ा जा रहा है, इब्रानी मसीही लोगों को अविश्वासी यहूदियों पर तरस खाना चाहिए था, जिन्हें प्रभु की "मेज" से खाने का अधिकार नहीं था या जो उसकी खून-खरीदी आशिषों में भाग नहीं ले सकते थे।

आयत 10 की बात का वास्तव में अर्थ यह है कि "हमारी एक वेदी है जो यहूदीवाद की किसी भी वेदी से श्रेष्ठ है, और उस वेदी में हर कोई भाग नहीं ले सकता।" वह वेदी क्या है? आयत 15 स्पष्ट करती है कि यह वेदी आत्मिक है। यह "वेदी" स्वयं मसीह (या वेदी उसके बलिदान) को दर्शाती है, जिससे हमें भोजन की वास्तविक आशिषें मिलती हैं।[31] उसके बलिदान में भाग लेने का अर्थ मसीह में स्वयं भाग लेना है।[32] पौलुस ने घोषणा की, "जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो; क्या बलिदानों के खाने वाले वेदी के सहभागी नहीं?" (1 कुरिन्थियों 10:18)। 1 कुरिन्थियों 9:13 में उसने कहा कि "जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी के साथ भागी होते हैं।"

साप्ताहिक सहभागिता में मसीह की मृत्यु का स्मरण करके हम निरन्तर उसकी आराधना करते हैं।[33] आराधना के महत्वपूर्ण कार्य के रूप में हमें इसमें गम्भीरता से भाग लेना आवश्यक है, न कि लापरवाही से या कभी कभी। याजक बलि किए गए पशुओं में से खाते थे; उसी प्रकार परमेश्वर की वेदी पर मसीह के बलिदान के लाभों में भाग लेने वालों के रूप में हम उस में आशिषों के भागी होते हैं। यहूदीवाद में बने रहने वालों और उद्धार के लिए व्यवस्था के लिए संस्कारों पर निर्भर रहने वालों को इस बड़ी वेदी या मसीहियत के लाभों को लेने का कोई अधिकार नहीं था। यहूदी लोगों के सभा के स्थान (तम्बू या मन्दिर) के पास आशिषें पाने के लिए आने की तरह थे। मसीही लोगों को मसीह के लाभों में भाग लेने के लिए इकट्ठा होना चाहिए।

पुरानी और नई वाचा में अन्तर बरकरार रहते हैं। पुराने नियम के बलिदान करते रहने वाले यहूदी नये नियम की आशिषें नहीं पा सकते थे। यह तथ्य कि व्यवस्था के अधीन लोगों को "खाने का अधिकार नहीं" था, मसीहियत की विशेषता को दिखाता है। इसके अलावा यह यहूदीवाद में वापस जाने के एक और खतरे की ओर ध्यान दिलाता है जिसमें व्यक्ति परमेश्वर की विशेष संगति में अपने हक्क को खो देगा। इसलिए हो सकता है कि "वेदी" "बलिदान" को दर्शाता अलंकार हो, जैसे हम "मेज" भरा होने की बात कह सकते हैं जिससे हमारे कहने का अर्थ "भोजन" होता है।[34] बेशक हमारी भौतिक वेदी नहीं है क्योंकि मसीहियत की सब महत्वपूर्ण बातें आत्मिक ही हैं। कलीसिया के समाधान के सामने मेज, बैंच या रोक लगाकर इसे "वेदी" कहना गलत नाम देना और हमारी मसीही "वेदी" को सही ढंग से न समझना है।

आयतें 11-13. प्रायश्चित के दिन छावनी के बाहर पशुओं के जलाए जाने का विचार बताया गया है। पाप के लिए बली किए जाने वाले बैल को छावनी के बाहर ले जाया जाता था (देखें लैव्यव्यवस्था 16:27)।[35] यीशु के फाटक के बाहर[36] क्रूस पर दिए जाने का विचार (आयत 12; देखें यूहन्ना 19:20) उस प्रतीक की पूर्ति हुई। दोष के कलंक को स्वीकार करते हुए ("फाटक के बाहर" का सम्भावित अर्थ) यीशु हमारे पापों को उठा पाया। छावनी (आयत

13) से निकलना आराधनालय और मन्दिर से पूरी तरह निकलने का सुझाव देता है। निकाले हुए होने के कारण हम पर भी वही दोष लगाया जा सकता है जो हमारे प्रभु पर लगा था। बेशक हम वही बलिदान नहीं करते है जो यीशु ने किया था; क्योंकि उसका बलिदान ''एक ही बार'' था (7:27) और हमारे बलिदान जारी रहते हैं। हमारे बलिदानों में परमेश्वर की स्तुति करना, सार्वजनिक रूप में उसके नाम का अंगीकार करना, करुणा के काम करना और दूसरों के साथ बांटना शामिल है (13:15, 16)। अन्य शब्दों में हमें सार्वजनिक आराधना में अपने विश्वास को दिखाना, दूसरों को परिवर्तित करने की इच्छा करना और ज़रूरतमंदों की सहायता करना आवश्यक है। यह ऐसे बलिदान हैं जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

यहूदी मत की महिमा अतीत की बात थी और यहूदी मसीही लोगों को ''छावनी से बाहर'' जाकर व्यवस्था से अपना हर सम्बन्ध तोड़ना आवश्यक था (आयत 13)। यह इब्रानियों की पुस्तक की अन्तिम अपील का सार है। फिर से लेखक की ताड़ना का आरम्भ सो आओ के साथ होता है। उसने मर रहे धर्म को छोड़ देने के लिए यह जबर्दस्त तर्क दिया,[37] जो केवल वास्तविकता का एक रूप था और उसे पहनने को कहा जो केवल मसीह यीशु में मिलता है। ''छावनी को छोड़ने'' का अर्थ पशुओं के बलिदानों को बंद करना और इस प्रकार यहूदी मत में पाई जाने वाली हर बात को छोड़ देना था।

जिस प्रकार इस्राएल की ''छावनी के बाहर'' पाप के लिए बलिदान किए पशुओं की देहें **जलाई जाती** थीं (आयत 11) वैसे ही मसीह ने ''फाटक के बाहर'' दुख सहा (आयत 12)। यरूशलेम के बाहर मारे जाने ने मसीह की मृत्यु के कलंक को और बढ़ा दिया।[38] वहां पर अपराधियों और परमेश्वर की निंदा करने वालों को मारा जाता था। इब्रानियों के लिए उसकी निंदा अपने ऊपर लेने को तैयार होना आवश्यक था (आयत 13)। उन्होंने ऐसा कैसे करना था?

> इब्रानियों की पुस्तक के अनुसार लोग अपने आप को इससे अलग करके निंदा को नहीं सहते, बल्कि मसीह के द्वारा परमेश्वर को स्तुति भेंट करके अर्थात दूसरों की शत्रुता के बावजूद मसीही समुदाय की सेवा करके और परदेसियों, कैदियों और सताए हुओं की देखभाल करते हैं।[39]

यहूदी मसीही ज़रूरमंदों को सहायता करने और समाज के ठुकराए या बुलाए हुए लोगों की देखभाल करके मसीह की निंदा को सह सकते थे।

आज कुछ लोग ''येशुआ यहूदी'' (''यीशु यहूदी'') बनने के इच्छुक हैं परन्तु कई और हैं जो यहूदी रस्मों को मानते हैं। यदि वे यहूदी रस्मों को केवल सांस्कृतिक रूप में मानते हैं–कि यहूदियों के सामने यहूदी लगें (देखें 1 कुरिन्थियों 9:20, 21) न कि उद्धार को कमाने या बरकरार रखने के माध्यम के रूप में, तो उनके लिए ऐसे काम करके मसीही बने रहना सही हो सकता है। परन्तु आज जो लोग उद्धार की इच्छा रखते हैं, उन्हें अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में केवल मसीह को ही स्वीकार करके उसकी मानना आवश्यक है। पुराने नियम के कायदों को मानकर कोई परमेश्वर को आदर नहीं दे सकता। उन्हें थोपने का अर्थ उन लोगों के साथ मिल जाना है जो यह मान करके कि अन्यजाति मसीही लोगों का खतना किया जाना आवश्यक है, अनुग्रह से

गिर गए थे (गलातियों 5:1-6)। यहूदी जाति वाली पृष्ठभूमि के मसीही लोग फसह की रस्मों को मानना चाह सकते हैं, परन्तु यह सोचना कि यह परछाईं परमेश्वर की व्यवस्था का अभी भी भाग है मसीह के इसे पूरा करने से इनकार करना है (मत्ती 5:17, 18; 1 कुरिन्थियों 5:7)। मसीह हमारा फसह है; उसने पुराने फसह को पूरा करके इसे हटा दिया है (1 कुरिन्थियों 5:7)।

पौलुस कुछ रस्मों को मानता था जैसा कि उसने मन्दिर में कुछ लोगों के शुद्ध किए जाने का खर्चा दिया और उनके साथ चढ़ावा चढ़ाया (प्रेरितों 21:20-26)। उसने यहूदी लोगों में तीमुथियुस को स्वीकार्य बनाने के लिए उसका खतना किया था (प्रेरितों 16:1-3)। परन्तु तीमुथियुस अर्ध यहूदी था। पौलुस ने तीतुस पर जो कि अन्यजाति था इस रसम को थोपने के किसी भी प्रयास को रोका (गलातियों 2:3)। प्रेरित जानता था कि मसीही लोगों का उद्धार अनुग्रह से हुआ है न कि मूसा की व्यवस्था से। शायद आज यहूदी मसीही ऐसे ही नियमों को मान सकता है, परन्तु हम नए नियम की कलीसिया में पुराने नियम की आराधना की बातों को नहीं ला सकते हैं।[40]

नये नियम के समय में रस्मों या उन नियमों को मानने में जो पहले मानने अवश्य थे यहूदियों और अन्यजातियों के बीच एक बड़ा अन्तर था, और आज उस अन्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए। किसी के लिए भी सबसे सुरक्षित बात यहूदी मत की "छावनी से बाहर जाना" है। लेखक ने इब्रानियों को यहूदी मत से अपने सम्बन्ध तोड़ लेने की सलाह दी।[41]

आयत 14. नगर के होने वाले विनाश के सम्बन्ध में मसीह की शिक्षा से प्रेरितों द्वारा प्रकट की गई बातों को ध्यान में रखते हुए यरूशलेम की "छावनी" के भीतर पनाह ढूंढ़ना मूर्खता थी। यह आयत यह सुझाव दे सकती है कि यरूशलेम निश्चय ही आराधना के लिए परमेश्वर के लिए पवित्र स्थान के रूप में टिका नहीं रह सकता था। मन्दिर की सही निशानी कुछ गिरी हुई चट्टानें रह गई हैं। पहली सदी का एक मात्र ढांचा हेरोदेस के मन्दिर की बाहरी दीवार है, जिसके भाग को अब "द वेलिंग वॉल" यानी रोने वाली दीवार कहा जाता है।

इस पृथ्वी पर **कोई स्थिर रहने वाला नगर**[42] नहीं है। यह समझ लेना कि "नगर" शीघ्र ही खत्म हो जाएगा और इसे पीछे छोड़ देना सदा रहने वाले और उत्तम नगर में विश्वास दिखाना था जिसकी राह अब्राहम देखता था। यह पक्की नींव वाला नगर स्वर्ग है (इब्रानियों 11:10, 16)। पृथ्वी का हर नगर उन चीज़ों का बना है "जो हिलाई जाती हैं" (इब्रानियों 12:27)। अपने जन्म स्थान से प्रेम करना या इसके नेताओं पर भरोसा करना किसी की आत्मा को पक्की शान्ति नहीं दिला सकता।[43] परमेश्वर के अनन्त नगर में भरोसा रखना हमें उस पर जो हमारे पास है संतुष्ट होने के योग्य बनाता है।

आयत 15. वचन यह अर्थ देता है कि कुछ लोग सार्वजनिक आराधना और परमेश्वर की स्तुति करने को नज़रअन्दाज़ कर रहे थे (10:25 पर टिप्पणियां देखें)। उन्हें डर होगा कि आराधना करने या लोगों में उनके विश्वास के पता चलने पर उन पर सताव किया जा सकता है। अपने पाठ को खत्म करने से पहले लेखक ने मसीही लोगों के "याजकाई" के काम का एक और हवाला दिया। पत्री में यह हम करें ... की अंतिम ताड़ना है। बलिदान हर किसी के द्वारा किए जाने आवश्यक हैं। अपने होंठों से परमेश्वर की स्तुति करना आवश्यक है परन्तु इतना ही काफ़ी नहीं है। हमें अपने विश्वास को जीना और बांटना आवश्यक है। आराधना का हमारा बलिदान मनुष्य की बनाई वेदी से नहीं बल्कि होंठों का फल के द्वारा होता है जो परमेश्वर की महिमा करने के

लिए हमारे हृदय से बोल निकालते हैं। आरम्भिक मसीही लोगों पर आरोप लगाया जाता था कि उनका न कोई बलिदान और वेदी है। भेंट के लिए उनके पास बलिदान थे परन्तु वे उसके द्वारा किए जाने वाले आत्मिक बलिदान थे (रोमियों 12:1, 2)। इस वाक्यांश पर बहुत ज़ोर दिया गया है, क्योंकि उनके स्तुति रूपी बलिदान मसीह के द्वारा दिए जाते रहना आवश्यक था, न कि किसी यहूदी बलिदान के प्रबन्ध के द्वारा।[44] यीशु में विश्वास लाने वाले याजकों के लिए यह स्मरण रखना आवश्यक था। पुराने नियम के अपने अध्ययन के आधार पर रब्बियों का यह कहना था: ''भविष्य में सब बलिदान बन्द हो जाएंगे; परन्तु स्तुति कभी बन्द नहीं होगी।''[45] यदि हम मसीह के वफ़ादार बने रहना चाहते हैं तो हमें स्तुति करते रहना आवश्यक है!

इब्रानियों 12:28 में यह ''परमेश्वर को स्वीकार्य आराधना'' है। ''होठों का फल'' जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं होशे 14:3 से लिया गया है (14:2; LXX)। ''धन्यवाद देना'' या ''अंगीकार'' करना- *homologeō* शब्द के दोनों अर्थ हो सकते हैं-वर्तमानकाल में है जो इस बात का संकेत है कि यह किया जाता रहना आवश्यक है।

ध्यान दें कि गले से की गई या मौखिक स्तुति को बलिदान माना जाता है, साजों में स्वर हो सकता है परन्तु मौखिक नहीं। मुंह से आवाज निकालना सार्थक ढंग से ''एक दूसरे से बातें करने'' के जैसा नहीं है (इफिसियों 5:19)। प्रेम और धन्यवाद की बातें बलिदानों से बेहतर हैं। मसीह के बलिदान से जानवरों के बलिदान सदा के लिए पुराने हो गए। बलिदान के रूप में आराधना की धारणा का परिचय भजन संहिता 50:12-15 में दिया गया है।

आयत 16. यहां चंदा देने को उदारता (*koinōnia*) कहा गया है। यह रोमियों 15:26 में वर्णित ''चंदा'' के लिए यूनानी शब्द है। हमारा चंदा वास्तव में इस बलिदान के सचमुच में *koinōnia* (''सहभागिता'') होने के लिए ''सह-भागिता'' होने चाहिए। परोपकार के काम हमारे ''जीवित ... बलिदान'' का भाग हैं (रोमियों 12:1)। ऐसे लोग जिन्हें सहायता की आवश्यकता होती है सदा रहेंगे (मरकुस 14:7) और मसीही लोगों को अपने धर्मार्थ कार्यों के लिए आगे होना चाहिए। याद करें कि कुछ इब्रानियों का सामान खो गया था, चाहे कानूनी जब्ती या चोरी से (इब्रानियों 10:34)। उस हानि को ''आनन्द'' से स्वीकार कर लेने वालों के लिए दूसरों के साथ अपनी भौतिक वस्तुएं बांटने में कोई समस्या नहीं होनी थी। बांटने की क्रिया में हम मसीह के साथ साथ एक दूसरे के भागीदार बन जाते हैं।

वर्तमान अगुओं के अधीन रहो और दूसरों के लिए प्रार्थना करो (13:17-19)

[17]अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उनकी नाईं तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

[18]हमारे लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं। [19]और इसके करने के लिए मैं तु?हें और भी समझाता हूं, कि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूं।

यीशु मसीह के अपरिवर्तनीय स्वभाव और मसीही शिक्षा को कस कर पकड़े रखने की आवश्यकता की चर्चा के बाद लेखक अगुओं के विषय पर लौट आया। उसने कलीसिया के अगुओं के प्रति हमारी जिम्मेदारियों पर ध्यान दिलाया। स्वर्गीय लक्ष्य की ओर जाने में दूसरों की अगुआई करने के लिए उन्हें पवित्र भरोसा दिया गया है। इसके साथ ही उनके काम में उनकी सहायता करना हमारी जिम्मेदारी है।

आयत 17. कलीसिया के अगुओं की आज्ञा मानने की आज्ञा वर्तमान काल में है। यह इस समय "प्राणों की निगरानी रखने वाले" लोगों की बात है न कि 13:7 वाले अतीत के लोगों की। प्राणों की निगरानी रखने वाले लोग अवश्य ही ऐल्डर होंगे। सही चरवाहों के रूप में, वे भेड़ों की रक्षा के लिए अथक प्रयास करते होंगे (प्रेरितों 20:17, 28-30)। स्वाभाविक ही है कि कलीसिया का इकट्ठा होते रहना ऐल्डरों को उन सदस्यों की आत्मिक स्थिति के प्रति चौकस रखता है, जो उन्हें सौंपे गए हैं।

यह तथ्य कि "ऐल्डर्स" और "चरवाहे" या रखवाले प्रेरितों 20 में एक ही पद वाले लोगों को कहा गया है। पौलुस ने "प्राचीनों" (*presbuteroi*; आयत 17) को बुलावा भेजा और फिर उन्हें "अध्यक्ष" (*episkopoi;* आयत 28) कहा। चरवाहे का उनका काम चौकसी करने और रखवाली करने के रूप में दिखाया गया है (*poimainō;* आयत 28) जो कि "पासबानों" का काम था। इसलिए "प्राचीन" और "अध्यक्ष" "पासबान" ही हैं, जो "चरवाहे" के लिए लातीनी शब्द है। KJV में इफिसियों 4:11 में इस शब्द का अनुवाद "*pastors*" (हिन्दी में "रखवाले"-अनुवादक) किया गया है। नये नियम में यह सभी विवरणात्मक शब्द एक ही पद के लिए हैं। 1 पतरस 5:1-4 में दोबारा समझाया गया है जहां पतरस ने "प्राचीनों" (*presbuteroi;* आयत 1) से "झुण्ड की रखवाली" (*poimainō*; आयत 2क) करने की अपील की, जिसका अर्थ झुण्ड को चराना या चरवाहे/पासबान का काम करना और "निगरानी" (*episkopeō*; आयत 2ख) करना था।

नया नियम कलीसिया के नेतृत्व के लिए स्पष्ट नमूना ठहरा देता है। प्रेरितों 14:23 कहता है कि हर कलीसिया में प्राचीन नियुक्त किए जाते थे। प्रेरितों 20:17, 28-30 संकेत देता है कि इफिसुस की कलीसिया में प्राचीन सेवा करते थे। फिलिप्पी की कलीसिया में "अध्यक्ष" ("प्राचीन या ऐल्डर") और "सेवक" (यानी डीकन) थे (फिलिप्पियों 1:1)। 1 तीमुथियुस 3:1-12 और तीतुस 1:5-9 में उनकी योग्यताएं बताई गई हैं। विभिन्न धार्मिक समूहों के अपने अपने संगठन के अनुसार उन्हें ठहराया जाता है, परन्तु हमें वही मानना चाहिए जो बाइबल बताती है। यदि हम हर मण्डली के लिए स्वतन्त्र रूप में ऐल्डरों के अध्यक्ष के रूप में दिए नमूने को बदल दें तो पवित्र शास्त्र में किसी भी बात के अधिकार के नमूने को कैसे ठहरा सकते हैं? प्राचीनों ने बड़े निर्णय लेने में प्रेरितों का साथ दिया (प्रेरितों 15:6, 22, 23)। यहूदिया में कलीसिया के पार किसी संगठन ने नहीं बल्कि प्राचीनों ने धन ग्रहण किया (प्रेरितों 11:27-30)। नये नियम में कलीसिया से सम्बन्धित किसी संगठन की जानकारी नहीं है जो कलीसिया के लिए इसका काम करता हो।

इस पत्र के प्राप्तकर्ता प्राचीन नहीं थे इसलिए उन्हें अपने अगुओं की "आज्ञा" मानने और उनके **अधीन** रहने का आग्रह किया गया। "आज्ञा" (*peithō*) का अर्थ "समझाना" या "मनाना" या "शांत करना" हो सकता है। "आज्ञा" मानने की आज्ञा पर, "अधीन" (*hupeikō*) होने

के द्वारा बल दिया गया है, जिसका अर्थ ''मान जाना,'' ''अब विरोध नहीं करना'' या ''समर्पण'' करना है। कुछ धार्मिक समूह मण्डली को नेतृत्व देते हैं जो कि नये नियम की शिक्षा से पीछे हटना है। बेशक विचार के मामलों में अपने काम के लिए प्राचीनों को सुझाव मानने चाहिए। परन्तु, ''जब वे परमेश्वर के वचन को सिखाते हैं, जब वे यीशु के वफ़ादार होने की विनती करते हैं, तो हमें उनकी अगुआई के पक्ष में अपने विरोधी विचारों को छोड़ देना चाहिए।'' यहां जिस बात की आज्ञा दी गई है वह अधीन होने के आदी होना (आदेशात्मक वर्तमानकाल)।[46] ''आज्ञा'' और ''अधीन'' दो मुख्य शब्द हैं जिन्हें नकारा नहीं जा सकता।

ऐल्डर या प्राचीन वे लोग हैं जो मण्डली के बीच में रहते या काम करते हैं, न कि दूर किसी कार्यालय में काम करने वाले नौकरशाह अधिकारी वे हो सकता है कि बाहर से आए वक्ताओं या माहिरों जैसे प्रभावशाली न लगते हों। जो भाइयों को चकित करने आते हैं, परन्तु उनके काम का एक आवश्यक और विनम्र सेवा के रूप में प्रतिफल दिया जाएगा (1 पतरस 5:1-5)।

LXX में ''अगुओं'' (*hēgeomai*) के लिए शब्द का इस्तेमाल उनके सम्बन्ध में किया गया है जो ''शासन करते हैं।'' यहां कुछ सरकारी अधिकार का संकेत तो है परन्तु विशेष पद का कोई संकेत नहीं है। साहित्यिक उपयोग में *episkopoi* (''अध्यक्ष'' या ''बिशप'') अथेने की ओर से कलीसिया, राज्य और अधीन नगरों की वाणिज्यिक गतिविधियों की निगरानी के लिए अपने दासों के पास भेजे गए राजनैतिक अधिकारी होते थे।

कलीसिया के हर सदस्य को ऐसी मण्डली में होने की इच्छा करनी चाहिए, जहां वह आत्मिक अध्यक्षों या निगरानों के अधीन हो सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह अगुओं के गुमराह होने पर आंख मूंदकर उनकी आज्ञा मानता रहे। **जागते** (*agrupneō*) शब्द ''*episkopein* के विपरीत किसी समाज की निगरानी के लिए तकनीकी शब्द नहीं है, परन्तु आने वाले न्याय को ध्यान में रखते हुए जागते रहने की ताड़ना देने के लिए आम इस्तेमाल होता था (मरकुस 13:33; लूका 21:36; तुलना इफिसियों 6:18)।''[47] अनन्तकाल को ध्यान में रखते हुए ''अगुओं'' को प्राणों के लिए जागते रहना आवश्यक था। इसका अर्थ यह है कि सही मार्ग पर अपने प्राणों को बनाए रखने के लिए कुछ सुदृढ़ीकरण आवश्यक हो सकता है!

''जागते'' शब्द ऐसी चौकसी का संकेत हो सकता है जिससे भेड़ों की हानि न हो।[48] जिन प्राचीनों की चिंता यहां तक हो जाती है वे झूठी शिक्षा देने वालों से कलीसिया की रखवाली करें जो भाइयों को गुमराह कर सकते हैं, पौलुस की चेतावनियों को मान रहे हैं (देखें प्रेरितों के काम 20:28-31)। वे ''प्राणों'' (*psuchē*) के लिए ''जागते'' हैं जिसका अर्थ है कि इसमें लोग शामिल हैं।

हर कलीसिया का लक्ष्य प्राचीनों के काम को आनन्दमय बनाना होना चाहिए। जब उन्हें प्रधान चरवाहे को लेखा देना (1 पतरस 5:4) है, तो हम चाहते हैं कि हम हर सदस्य के लिए यह कहने के योग्य हों कि ''यह मसीही अच्छा और मरने तक वफ़ादार था।'' यूहन्ना ने कहा है, ''मुझे इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि मैं सुनूं कि मेरे बच्चे सत्य पर चलते हैं'' (3 यूहन्ना 4)। पौलुस की सोच थिस्सलुनीके के लिए भी यही थी जिन्हें उसने बदला था (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। उसने कहा कि विश्वास में उसके बालकों ने उसे ''घमण्ड करने का कारण'' दे दिया (फिलिप्पियों 2:16)।

हम नहीं चाहते कि हमारे अगुओं को किसी के लिए भी यह कहना पड़े, "हे पिता, हमें अफ़सोस है। हमने उसे विश्वासी बनाए रखने की कोशिश की; परन्तु वह फिर गया और हमारे किसी प्रयास का उसे वापस लाने में कोई फ़ायदा नहीं हुआ।"[149] यह कहना कि अविश्वासी मसीही का कुछ लाभ नहीं पर्दा डालना हो सकता है (इब्रानियों 10:31; 12:29 पर विचार करें)। निष्फल और अविश्वासी व्यक्ति प्राचीनों के लिए अफ़सोस, भाइयों के लिए सम्भावित खतरा और अपने लिए अनन्त हानि का कारण बनता है।

आयतें 18, 19. आयतें 18 और 21 में लेखक ने हमारे और हम की बात की। यदि यह सचमुच में बहुवचन है (और सम्पादकीय "हम" नहीं), तो यह इस बात को दिखाता है कि इस लेख को लिखने में दूसरे लोग भी शामिल थे। आयतें 19 और 22 में दोबारा उत्तम पुरुष एक वचन मिलता है। यह स्पष्ट है कि इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भिक पाठक लेखक को जानते थे। उस संदेश को लिखने के बाद जो परमेश्वर उससे दिलवाना चाहता था, अब लेखक का विवेक बिल्कुल साफ़ था। उसने बार-बार अपने पाठकों को उनके सामने आने वाले खतरे से आगाह किया था, परन्तु उसे उनकी भी सहायता चाहिए थी।

पाठकों को दो बातें करने के लिए कहा गया था। पहली लेखक ने उसके लिए प्रार्थना करने की (या जैसा कि काल से संकेत मिलता है "प्रार्थना करते रहने की"; आयत 18) विनती की। और भी (आयत 19) सुझाव देता है कि वह ऐसा कर रहे थे। दूसरा, उसने उन्हें अपने विवेक पर ध्यान देने का आग्रह किया, जो उसने उनके साथ ईमानदारी वाले व्यवहार के प्रमाण के रूप में दिया (देखें रोमियों 9:1; 2 कुरिन्थियों 1:12; 6:3)। उनके साथ उस ने सब बातों में अच्छी चाल चली थी इस कारण वह उनकी प्रार्थनाओं का हक्कदार था। अपने मन में उसे मालूम था कि उसने अपना कर्त्तव्य निभा दिया है। पौलुस अपने पत्रों के अन्त में आम तौर पर प्रार्थना करने की विनती करता था (रोमियों 15:30; इफिसियों 6:18, 19; कुलुस्सियों 4:3; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1)। निश्चय ही पहली सदी के किसी भी पवित्र जन की यह स्वाभाविक विनती रही होगी।

लेखक इब्रानी मसीही लोगों के प्रति कपटी नहीं था, क्योंकि उसने उन्हें आने वाले खतरों के प्रति साफ़-साफ़ चौकस किया था। उसने उन्हें यहूदीवाद और बलिदानों के उसके प्रबन्ध के अन्त के आने के बारे में भी बताया था। वक्ता की ईमानदारी के सम्बन्ध में उनके मनों में कुछ संदेह रहे होंगे वरना ऐसी सफ़ाई देने की आवश्यकता नहीं होनी थी।

लेखक ने इन भाइयों और उनकी प्रार्थनाओं में विश्वास दिखाया। उसने उनके **पास** आने की उम्मीद की (आयत 19)। क्या वह कैद में था? क्या उसे उन से मिलने से, शायद शैतान द्वारा रोका जा रहा था (1 थिस्सलुनीकियों 2:18)? कैद में होने का समय एक सम्भावित व्याख्या लगती है। इस्राएल के हर बालक के लिए यरूशलेम उसके सपनों का देश यानी उसका "घर" था। अपनी दूसरी कैद के समय यह जानने से पहले कि वह रोम से नहीं निकल सकता, पौलुस ऐसी टिप्पणियां कर सकता होगा (जैसा कि 2 तीमुथियुस 4:6-8 संकेत है)। वह गमलीएल की छत्रछाया में बड़ा हुआ था और उसके लिए वह बड़ा नगर दूसरा घर था।

प्रार्थना के लिए कहना निश्चय ही नये नियम के पवित्र लोगों के लिए आम बात थी, परन्तु पौलुस के लिए कुछ अधिक ही थी।[50] उसका मानना था कि फिलेमोन की प्रार्थनाओं के कारण वह

भाइयों को शीघ्र मिल पाएगा (फिलेमोन 22)। स्पष्टतया इसके लिए आश्चर्यकर्म की आवश्यकता नहीं होनी थी, बेशक परमेश्वर द्वारा किया गया उपाय आवश्यक होना था। इब्रानियों का लेखक प्रेरितों 12 में पतरस के आश्चर्यकर्म के द्वारा छुटकारे के बारे में और प्रेरितों 5:18–21 में प्रेरितों के छूटने के बारे में जानता होगा, परन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि उसने अपेक्षा की हो कि उसकी या उसके पाठकों की प्रार्थनाओं के उत्तर में ऐसा होगा। यदि वह कैद में नहीं था और उसे मालूम था कि तीमुथियुस छूट गया है (आयत 23), तो उसे उम्मीद होगी कि वे दोनों इन इब्रानियों के पास इकट्ठे जा सकते हैं। यदि वह पत्र स्वयं देता तो और बहुत सी बातें बता सकता था।

परमेश्वर तक और भाइयों तक पहुंचें (13:20-25)

[20]अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया। [21]तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हममें उत्पन्न करे, जिसकी बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[22]हे भाइयो मैं तुम से विनती करता हूं, कि उपदेश की बातों को सह लो; क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है। [23]तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूंगा। [24]अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहो। इटली वाले तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

[25]तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।

वे कौन सी अन्तिम बातें हैं जो इस लेखक ने अपने पाठकों को बताईं? वह उन्हें पुरानी व्यवस्था और नई और जीवित व्यवस्था के बीच अन्तर और गहन और विस्तृत अध्ययन में से लेकर आया था। अब उसके उन्हें अलविदा कहने का समय था। उसने प्रशंसा, प्रोत्साहन और आनन्द के साथ समापन किया।

आयत 20. उन्हें अपने लिए प्रार्थनाएं करने को कहने के बाद लेखक ने उनके लिए प्रार्थना की। केवल शान्तिदाता परमेश्वर ही सच्ची शान्ति दे सकता है। वह वह परमेश्वर है जो "शैतान को तुम्हारे पांवों से कुचलवा" सकता है (रोमियों 16:20)। "शान्तिदाता परमेश्वर" का इस्तेमाल नये नियम में छह और बार हुआ है जिसमें हर बार पौलुस ने ही इसका इस्तेमाल किया है।[51] परमेश्वर को छोड़ देने पर कोई शान्ति नहीं मिल सकती। हमें शान्ति क्रूस पर मसीह के मरने के कारण मिली है (इफिसियों 2:14–17), जो राज्य/कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच भी शांति ला सकता है। केवल परमेश्वर ही यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा कलीसिया को ऐसी शान्ति दे सकता है।

कलीसियाओं में जिन्हें इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई थी दलबंदी अवश्य होगी। उनका सम्भावित विश्वासत्याग जो अभी हुआ नहीं था, उसे जिसके लिए मसीह आया था नष्ट कर सकता था–सहायक शान्ति के साथ उनके प्राणों का उद्धार। इब्रानी मसीही लोगों को आपस में

और परमेश्वर के साथ शान्ति यानी मेल की आवश्यकता थी। इस पत्र के लिखे जाने के बाद से यरूशलेम में कोई शान्ति नहीं होनी थी। इसके विपरीत परमेश्वर के स्वभाव का सार भी शान्ति है।

यीशु महान रखवाला यानी हमारे प्राणों का एकमात्र अकेला "पासबान" या पास्टर ("रखवाला") है।[52] इस रूपक में एक कोमलता मिलती है जो हर स्थान और समय के लोगों को खींचती है। "यीशु है सच्चा गडरिया" जैसे भजन आराधकों की ओर से उसे प्रेमपूर्वक उत्तर को बढ़ावा देते हैं, जो उनके प्राणों की सम्भाल करता है।

बेशक यीशु के परमेश्वर के दाहिने हाथ होने के बार-बार हवाले मसीह के पुनरुत्थान को मान लेते हैं, परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में आयत 20 में उसके पुनरुत्थान का केवल एक हवाला है।[53] परन्तु "पुनरुत्थान" (*anastasis*) के लिए शब्द जिसका इस्तेमाल 6:2 और 11:35 में हुआ है, इस आयत में नहीं मिलता। इसके बजाय हमें *anagō* शब्द मिलता है जिसका अर्थ ले आया या "ले गया" है। मसीह को जिलाया गया और फिर मरे हुओं में से स्वर्ग में "ले आया गया।" ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यीशु ने अपना लहू बहाया था और इससे नये नियम का परिचय हुआ। इसे कर लेने के बाद वह वह सब कर सकता था जो इन पवित्र लोगों को "सिद्ध" करने (देखें आयत 21) या "तैयार" करने (KJV) के लिए जिसका अर्थ "सम्पूर्ण" है, आवश्यक था। परमेश्वर की सहायता से वे वह सब कुछ कर सकते थे जो किया जाना आवश्यक था।

यीशु **भेड़ों का** "महान रखवाला" और "प्रधान रखवाला" भी है (1 पतरस 5:4)। पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों का "रखवाला" आम तौर पर स्वयं परमेश्वर या मूसा था (देखें भजन संहिता 77:20; 95:7)। बिना परमेश्वर के कोई और इस "महान रखवाले" के बराबर नहीं हो सकता। हमने देखा है कि ऐल्डर प्रधान चरवाहे के अधीन "रखवालों" के रूप में सेवा करते हैं (इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 5:1, 4)।

इस स्तुतिगान में फिर से सनातन वाचा के लहू का विचार है। यह उस सब का संक्षिप्त सार लगता है जो इब्रानियों की पुस्तक में कहा गया है, कम से कम इसका सबसे बड़ा थीम है। उस "सनातन" के लहू की सामर्थ हमें पूरी तरह से वह करने के योग्य बनाती है जो परमेश्वर चाहता है। पुरानी वाचा के अस्थाई होने के कारण उससे यह नहीं किया जा सकता था। यीशु के लहू के द्वारा आरम्भ की गई वाचा (मत्ती 26:28) वास्तव में सदा के लिए या "सनातन" है।

आयत 21. यह प्रभु की इच्छा है कि हमें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे हम उसकी इच्छा पूरी करें। जब हम आज्ञा मानते हैं तो परमेश्वर हम में उसे करने के लिए काम करता है जिसके लिए हमें तैयार किया गया है (देखें फिलिप्पियों 2:12, 13)। पवित्र शास्त्र हमें "हर एक भले काम के लिए" तैयार करने के लिए भी है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। परमेश्वर की इच्छा से मेल खाते हुए हम जो भी करते हैं उसमें परमेश्वर को महिमा देनी आवश्यक है। यह महिमा कलीसिया और मसीह यीशु के द्वारा दी जाती है (इफिसियों 3:21)। "परमेश्वर का काम मुनष्य के काम को सम्भव बनाता है,"[54] परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के आज्ञापालन में मनुष्य का उत्तर भी आवश्यक है। हमारा परमेश्वर हर उस "भली" वस्तु को उपलब्ध कराता है जिसकी हमें आवश्यकता है। वह हमें दुष्टों द्वारा बुरे इरादे से उत्पन्न की गई परिस्थितियों में भी प्रबल होने के लिए "अच्छी" सहायता करता है (रोमियों 8:28)।

आयतें 20 और 21 वाली प्रार्थना परमेश्वर के हम में और हमारे द्वारा वह सब पाने की है

जो विश्वासियों को यीशु मसीह के द्वारा उसकी महिमा करवाने के लिए आवश्यक है। इसलिए पुत्र की महिमा वैसे ही होनी चाहिए जैसे पिता की होती है (यूहन्ना 17:5)। स्तुति के महिमा देने के ये अन्तिम रूप मसीह के लिए हैं। इफिसियों 3:21 में "कलीसिया में और मसीह यीशु में" महिमा परमेश्वर को दी जानी आवश्यक है। यह हमें मसीह को महिमा देने से रोकता नहीं है, जैसा कि यहां इब्रानियों में दिखाया गया है। **आमीन** असामान्य बात है परन्तु दी गई सच्चाइयों पर अतिरिक्त ज़ोर देने का आत्मा का यही ढंग हो सकता है।[55]

आयत 22. इस पत्री में यहूदीवाद के सम्बन्ध में कठोर बातें कहीं गई थीं, इस कारण पाठकों को इस उपदेश की बातों को सह लेने को कहा गया। इसका अर्थ था कि उन्हें केवल इसके लम्बे होने को ही सहन नहीं करना था, बल्कि इसकी हर बात पर ध्यान देना चाहिए था। "उपदेश" शब्द में सांत्वना (2 कुरिन्थियों 1:3–7) और ताड़ना ("प्रोत्साहन"; प्रेरितों 15:31; NASB) दोनों शामिल हैं। "उपदेश की बातों" (*paraklēsis*)वाक्यांश पत्री को उपमा की तरह एक उपदेश यानी प्रवचन जैसा दिखाता है (प्रेरितों 13:15)। इसी शब्द का इस्तेमाल सार्वजनिक रूप में (1 थिस्सलुनीकियों 2:3) या मण्डली के भीतर (रोमियों 12:8; 1 तीमुथियुस 4:13) प्रचार करने के लिए किया गया है। पूरी पुस्तक में उपदेश या ताड़नाएं इस विचार का समर्थन करती हैं (देखें 2:1–3; 3:12–14; 4:11, 14; 5:11–6:8; 10:19–25; 13:1–17)।

इस "पत्री" (**लिखा** संदेश, *epistellō*), या पत्र में प्रवचन की विशेषताएं हैं। ऊंचा-ऊंचा पढ़ने पर चाहे इसे एक घण्टे में पढ़ा जा सकता है,[56] परन्तु पत्र कहलाने के लिए इब्रानियों की पुस्तक थोड़ी लम्बी है।[57] इससे हमें पहली सदी के प्रवचनों की लम्बाई का थोड़ा पता चल सकता है। एक सम्भावित अपवाद प्रेरितों 20 में पौलुस का सबक है जो आधी रात तक चलता रहा था। वह एक विशेष मामला था, क्योंकि उसका मानना था कि त्रोआस में भाइयों के लिए यह उसका अन्तिम प्रवचन होगा।

आयत 23. पौलुस के पत्रों में हमें तीमुथियुस के कैद में होने का कोई उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु जो प्रेरित के साथ-साथ रहने में इतना वफ़ादार था कि उसे जेल में देखने के लिए अपनी सुरक्षा खतरे में डालना कोई बड़ी बात नहीं होगी। **छूट गया** (*apoluō*) शब्द का अर्थ "छोड़ना" हो सकता है जैसे "किसी मिशन पर जाने के लिए छुट्टी देना" या किसी को "क्षमा" दे देना (मत्ती 18:27; देखें लूका 6:37)। परन्तु यह विचार कि पौलुस किसी अज्ञात जेल से छूटा था बिल्कुल असम्भव है।[58] पौलुस के साथ होने के कारण नये "पंथ" के सदस्य के रूप में "तीमुथियुस" को दोषी ठहराया गया होगा; परन्तु रोमी नागरिक न होने के कारण उसे वे अधिकार नहीं होंगे जो पौलुस के पास थे। रोमी अधिकारियों के यह फैसला देने से पहले कि वह रोम के लिए कोई खतरा नहीं था और उसे छोड़ दिया गया डरपोक जवान (देखें 2 तीमुथियुस 1:7) कितनी देर तक जेल में रहा होगा? निश्चय ही उसने "जाड़े से पहले चले आने का प्रयत्न" करने की पौलुस की बात को माना था (2 तीमुथियुस 4:21क)। यहां दी गई निजी जानकारी का इस्तेमाल यह तर्क देने के लिए किया गया है कि इब्रानियों की पुस्तक को लिखने वाला पौलुस ही है। पौलुस से बढ़कर तीमुथियुस के कोई और इतना करीब नहीं था। यहूदी श्रोताओं के होने ने लेखक को उस बेकार की प्रशंसा से रोक लेना था जो फिलिप्पियों के नाम पत्री में इस अर्ध-यहूदी भाई पर की गई थी (2:19–24)। पूरी पत्री में केवल तीमुथियुस ही वह मसीही है जिसके

नाम का उल्लेख किया गया है।

आयत 24. पत्र कलीसिया या कलीसियाओं के प्राचीनों के नाम नहीं बल्कि इसके लोगों के एक भाग को लिखा गया था। लेखक उन्हें यहूदीवाद में वापस जाने से रोकने का प्रयास कर रहा था। इन भाइयों के लिए लेखक के अति उदार नमस्कार के साथ अपने सब अगुओं ... को नमस्कार करना आवश्यक था। यदि कलीसिया के इस छोटे से झुण्ड में पूर्व के यहूदी याजक थे (प्रेरितों 6:7), तो उन्हें प्राचीनों का सम्मान करना कठिन लगता होगा जिन्हें आम लोगों में से चुना गया था। उन्हें अपने "अगुओं" (*hēgeomai*) की "अधीनता" को मानते हुए "अधीन" होना आवश्यक था (13:17; ASV)। *Hēgeomai* अगुआई करने या आज्ञा देने की शक्ति का संकेत है। ऐसे अधिकार को मानना कुलीन याजकों के लिए अपने आपको नीचा दिखाना लगता होगा। उन्हें कुछ "अगुओं" व अन्य लोगों को "नमस्कार" (*aspazomai*) करना आवश्यक था। इसमें कलीसिया के अगुओं को "गले लगाना" भी हो सकता था। कलीसिया के निगरानों की अगुआई के अधीन होना और उनके पीछे चलना दीन मन और सचमुच में परिवर्तित होने को दिखाना था।

उन्हें सब पवित्र लोगों यानी मसीही लोगों को ही नमस्कार करना था, जैसा कि रोमियों 16:16 में पौलुस ने आज्ञा दी थी। उसने ऐसे सलाम "मसीह की सब कलीसियाओं" की ओर से भेजे। यह स्पष्ट है कि पवित्र लोग यानी संत जीवित लोग थे, न कि बहुत पहले मर चुके पूजनीय लोग। मसीही लोग संतों के आगे या उनके द्वारा प्रार्थना नहीं करते।

इटली वाले का अर्थ "जो इटली में रहते हैं" या "जो इटली से हैं" हो सकता है जो किसी और स्थान में लेखक के साथ थे। इस वाक्यांश से यकीनी तौर पर यह नहीं बताया जा सकता कि लेखक कहां था; इसलिए अधिकतर अनुवाद मूल लेख की तरह ही अस्पष्ट थे।[59] इटली के मसीही लोगों के लिए अपने देश में यह पदनाम उपयुक्त होना था जिन्होंने दूर देश में सलाम भेजा था। यह अभिव्यक्ति इटली के भाइयों की ओर से दूर देश में रहने वाले पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं के लिए सलाम हो सकता है; दोनों समूह कभी एक दूसरे से मिले नहीं थे।

आयत 25. अनुग्रह के लिए शब्द *charis* है। मसीही पत्राचार में यह एक सामान्य आशीष वचन था, और पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए सलाम का विशेष ढंग था।[60] इसमें पत्र को प्राप्त करने वाले व्यक्ति पर ईश्वरीय आशीष दिए जाने की इच्छा का संकेत होता था। औपचारिक सलाम से बढ़कर आशीष देना आम तौर पर प्रेरिताई के अधिकार से होता था। हर किसी को जिसकी सबसे अधिक आवश्यक है वह परमेश्वर का अनुग्रह है। यहूदिया के मसीही लोगों को मिलने वाली यातनाओं के साथ इस आशीष की विशेषकर आवश्यकता थी।

प्रासंगिकता

अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करना (13:1)

"मेरा भाई कौन है?" कोई अनैतिक, अवैध, या अनुपयुक्त प्रश्न नहीं है। यीशु ने "मेरा पड़ोसी कौन है?" का प्रश्न पूछने वाले व्यवस्थापक को उत्तर दिया था (लूका 10:29–37), परन्तु उसने उससे कहीं बढ़कर किया। उसने उस व्यक्ति को उस प्रश्न का उत्तर दिखा दिया जो

उसे पूछना चाहिए था: ''मैं किसका भाई बनूं?'' उत्तर था कि ''सारी मनुष्यजाति का, उनका भी जिन्हें तू सबसे तुच्छ मानता है, जैसे सामरी था।'' भाईचारे की प्रेम पड़ोसी होने के प्रेम से आगे निकल जाता है; यह वह विशेष प्रेम है जिसे उन सब भाइयों के लिए होना चाहिए जो मसीह में विश्वासी हैं।

यदि हम उचित प्रेम रखते हैं तो हम सब भाइयों और बहनों को तब तक प्रभु के वफ़ादार मानेंगे जब तक वे अपने आपको इसके विपरीत साबित नहीं कर देते। किसी दूसरे को विश्वासी भाई मानने इसे इनकार कर हमें ध्यान से और जानबूझकर विचार करना आवश्यक है। हमें पूछना चाहिए, ''क्या यह भाई कमज़ोर है?'' यदि हां तो हमें उसके साथ बड़ी सावधानी से व्यवहार करना चाहिए जिससे उसे ठोकर न लगे और वह गिर न जाए। जिससे विश्वास से उसके गिरने में हमारा योगदान न हो जाए (1 कुरिन्थियों 8:12, 13)।

पवित्र शास्त्र बताता है कि अपने विचार को ऐसे बढ़ावा देने वाले व्यक्ति से, जिससे मसीह की देह में फूट पड़ती हो बचना चाहिए (तीतुस 3:10, 11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। तीतुस 3:10 में ''पाखण्डी'' के लिए शब्द *hairetikos* (''फूट डालने वाला''; NASB) है, जो झगड़े उत्पन्न करने वाले या फूट डालने वाले के लिए है। अपने विचार को दूसरों पर थोपने वाला व्यक्ति भाईचारे की संगति को खत्म करवा सकता है। ऐसे व्यक्ति को ऐसी देह में सहन नहीं किया जा सकता जो भाईचारे की प्रीति रखना चाहती हों।

कैदियों से सम्बन्ध में (13:3)

कैदियों से मिलने जाना आनन्द देने वाला कार्य नहीं हो सकता परन्तु प्रभु द्वारा इसकी सराहना की गई है। दूसरों की सेवा करते हुए हम मसीह की सेवा कर रहे होते हैं (मत्ती 25:36, 43)। कोई सोच सकता है, ''कानून तोड़ने वाले लोगों के साथ शामिल हुए बिना मेरे सामने और भी समस्याएं हैं।'' हमें याद रखना चाहिए कि अपनी परेशानियों पर जय पाने का बेहतर ढंग दूसरों की सहायता करने पर ध्यान देना है।

जिस मण्डली में मैं सेवा करता हूं उसने पिछले दस वर्षों में आस पास की जेलों में एक हज़ार के लगभग लोगों को बपतिस्मा दिया है। नगर के थोड़ी बाहर एक बड़ी जेल में इस सेवकाई से एक सप्ताह में दो तीन बपतिस्मे हो ही जाते हैं, और किसी दिन रविवार को एक दर्जन लोगों के बपतिस्मा लेने की बात सुनना कोई अनोखी बात नहीं है। मैं इन भाइयों के लिए हमदर्दी रखने की कोशिश करता हूं; परन्तु रविवार दोपहर आराधना के बाद मैं चला जा सकता हूं परन्तु इन भाइयों को रुकना पड़ता है। ''कैदियों की सुधि लेना जैसे वे उनके साथ कैदी हों'' कितना कठिन है!

विवाह को परमेश्वर द्वारा ठहराया गया है (13:4)

परमेश्वर ने स्वयं विवाह को ठहराया (उत्पत्ति 2:20-24)। परमेश्वर द्वारा एक ही चीज़ जिसे बनाया गया परन्तु ''अच्छा नहीं'' माना गया वह मनुष्य का अकेलापन था (उत्पत्ति 2:18) और उसने उचित सहायक बनाया। ''सहायक'' के लिए ''*help meet*'' (*'ezer*) अभिव्यक्ति केवल एक साथी से बढ़कर संकेत देती है; यह सुझाव देती है कि स्त्री वह उपलब्ध कराती है जिसकी पुरुष में कमी है। परमेश्वर को मालूम था कि पुरुष और स्त्री दोनों को इकट्ठे रखकर

वह क्या कर रहा है; क्योंकि दोनों में आम तौर पर अलग अलग हुनर होते हैं और उनके भाग मिलकर पूरा बन जाता है (केवल शारीरिक अर्थ में ''एक तन'')।

यह सोचना कि दो पुरुष और दो स्त्रियां एक दूसरे की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते थे, बेतुका है। निश्चय ही उनके बच्चे नहीं हो सकते या वे बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते। समलैंगिक मिलन को ''विवाह'' का नाम देना युगों की समझ के विरुद्ध है और निश्चय ही अन्त में अपनी ही मूर्खता में नाकाम हो जाता है। प्राचीन जगत में सदोम के व्यभिचार के कारण नगर और इसके वासियों का विनाश हुआ। बाइबल इस प्रश्न का उत्तर नहीं देती है कि समलैंगिक प्रवृत्तियां जन्मजात होती हैं या विकसित की जाती हैं। यह केवल इतना कहती है कि ऐसा करना पाप है। समलैंगिकों और बहुलैंगिकों की समस्या आत्मसंयम की कमी है।

आत्मिक उद्देश्यों के लिए या विभिन्न कारणों से कई लोग अकेले रहना चुनते हैं। परमेश्वर और मनुष्यजाति की सेवा करना अकेले व्यक्ति के लिए बड़ा कठिन लग सकता है। टूटी शादियों की अफसोसनाक दर उस अद्‌भुत आनन्द और प्रतिफल को मात नहीं देती है जो परमेश्वर की इच्छा अनुसार बनाए गए विवाह में होती है, न ही कोई बस बात का खण्डन कर सकता है कि आज भी यह परमेश्वर की योजना है। विवाह को एक प्रकार के बंधन के रूप में देखने वाले व्यक्ति ने कभी एक पुरुष और एक स्त्री के बीच परमेश्वर के बनाए स्नेहपूर्ण, पारस्परिक विचारवान सम्बन्ध पर कभी ध्यान नहीं दिया। इसके साथ ही कोई भी व्यक्ति जिसे लगता है कि प्रेमपूर्वक विवाह अपने आप में सम्पूर्ण है, गलत है। परमेश्वर की योजना पर नहीं बल्कि इसमें शामिल दोनों की उन्नति के लिए बहुत काम किया जाना आवश्यक है। उन्हें स्वाभाविक स्वार्थ पर काम करने के बजाय एक दूसरे की आवश्यकताओं से तालमेल बिठाना आवश्यक है। असफल शादियों का कारण स्वार्थ है।

तलाक से विवाह को कलंकित किया जाता है। परमेश्वर की दृष्टि में मृत्यु को छोड़ किसी और बात से विवाह खत्म नहीं होना चाहिए। पतियों को अपनी अपनी पत्नियों से प्रेम करने, और पत्नियों को अपने अपने पतियों से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 5:25; तीतुस 2:3, 4)। परमेश्वर की लिए आदर जो विवाह का सम्मान करता है उसके भय में रहते हुए विवाह को बनाए रखने का पर्याप्त कारण होना चाहिए।

परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा (13:4)

विवाह ''आदर की बात'' है, जिसका अर्थ है कि यह परमेश्वर की नज़र में प्रिय, बड़े मोल का, कीमती है। इसके विपरीत पवित्र शास्त्र विवाह के लाभ के बिना यौन सहवास को किसी भी प्रकार से उचित नहीं मानता। इस कारण हमें मान लेना चाहिए कि मसीह लोग ऐसे जीवन का सम्मान नहीं करते। ऐसा सम्बन्ध हानिकारक है और ऐसी जीवन शैली परमेश्वर की दृष्टि में घिनौनी है; वास्तव में 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8 में इसकी निंदा की गई है। आरम्भिक कलीसिया ने आम समाज से अलग उच्च नैतिक मानदण्ड बनाए।

शारीरिक पापों का स्वाभाविक परिणाम शारीरिक और भावनात्मक दुख दोनों हो सकता है। परमेश्वर ने हमें इस इरादे से बनाया कि हम सच्चे होंगे और दुराचारी नहीं होंगे। हर शारीरिक

पाप किसी न किसी प्रकार के दुख का कारण बनता है।

उदाहरण के लिए, तम्बाकू से सांस या हृदय का रोग हो सकता है, शराब से गुर्दे की बीमारी हो सकती है, व्यभिचार से उपदंश या प्रमेह के कारण गुप्त अंग खराब हो सकते हैं। प्रकृति की प्रतिक्रिया के रूप में किसी को हानिकारक परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। परमेश्वर ने इन्हें व्यक्ति के "शरीर के द्वारा विनाश" को बोने का परिणाम बनाया है (गलातियों 6:7, 8)। वास्तव में व्यभिचार करने पर व्यक्ति अपने ही शरीर के विरुद्ध पाप करता है (1 कुरिन्थियों 6:18)। शरीर को बहुयौन साथियों के लिए नहीं बनाया गया है, जिसमें एक के बाद किसी दूसरे से सम्बन्ध बनाया जाए, न ही बहुगामी सम्बन्धों के लिए जैसा कि कुछ धार्मिक समूह करते हैं। ऐसा करना किसी को सदा का आनन्द नहीं दे सकता।

प्रभु हमें नहीं छोड़ेगा (13:5, 6)

यह बात कि प्रभु हमें नहीं छोड़ेगा उत्पत्ति 28:15; व्यवस्थाविवरण 31:6; यहोशू 1:5; और 1 इतिहास 28:20 पर अधारित है। हमें कई बार लग सकता है कि हमारे जीवन टूट रहे हैं। जब समस्याएं बहुत अधिक लगती हों, जब अनावश्यक दोष या बेहद उदासी का सामना हो, तो जीवन निराशाजनक और अंधकारमय लग सकता है। यही वह समय होता है जब मसीही मित्रों से मिलने, सलाह लेने और सहायता लेने की आवश्यकता होती है। प्रभु ऐसे मित्रों के द्वारा काम कर सकता है।

जब आपको *लगे* कि परमेश्वर आपके साथ नहीं है, तभी वह आपके सबसे निकट हो सकता है। वह आपकी परिस्थितियों में इस प्रकार से काम कर रहा हो सकता है जिसकी अब आप कल्पना नहीं कर सकते। भावनाएं अक्सर गलत होती हैं। इब्रानियों 13:5, 6 में विश्वास करते हुए, भरोसेमंद विश्वास से सहायता के लिए प्रार्थना में लगे रहकर आगे बढ़ते रहना आवश्यक है।

कठिन समयों के लिए तैयारी के लिए हम ऐसे वचनों को याद कर सकते हैं:

परमेश्वर हमारे शरणस्थान और बल है,
संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायता।
इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए,
और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं (भजन संहिता 46:1, 2)।

बिना डर के भरोसा (13:6)

विश्वास के द्वारा मिलने वाले आश्वासन से कोई पूछ सकता है, "मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" (भजन संहिता 118:6ख)। कोई भी हमें किसी भी प्रकार से सदा के लिए हानि नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ खड़ा है। इस सच्चाई में विश्वास के साथ हम किसी भी भय से जो हम पर आ सकता है विजय पा सकते हैं। परमेश्वर की शांति और सामर्थ उस व्यक्ति के लिए उपलब्ध है जो पवित्र शास्त्र में बताई गई बातों के द्वारा परमेश्वर को अपने जीवन को चलाने देता है।

काम चलता रहता है (13:7)

कलीसिया को हमेशा अच्छे, विनम्र लोगों की आवश्यकता रहेगी जो सेवा करते हुए अगुआई करें। जॉन वैसली के सम्मान में वेस्टमिंस्टरऐबे में एक यादगारी पत्थर में यह शब्द मिलते हैं: ''परमेश्वर अपने मज़दूरों को दफ़ना देता है, परन्तु उसका काम चलता रहने देता है।'' हमारे बचपन के दिनों के भले पुरुषों और स्त्रियों के उदाहरणों का अनुसरण करना हमें बेहतर व्यस्क बना सकता है। मेरे माता-पिता मेरे सामने हमेशा हमारी मण्डली के सम्माननीय लोगों को ऐल्डरों और प्रचारकों के रूप में रखते थे। परन्तु कई बार मनुष्य से हमें निराशा मिलती है। कलीसिया के अगुओं ने भी विश्वास को त्याग दिया है। हमें मानवीय निर्बलताओं को अपने आपको निराश करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। आयत 8 हमें अपने सबसे बड़े आदर्श मसीह की ओर ले जाती है जो हमें कभी हरने नहीं देता या अपने सिद्धांतों को छोड़ता नहीं है।

''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है'' (13:8)

''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है'' (आयत 8)। कुछ लोग इस सच्चाई का इस्तेमाल यह बहस करने के लिए करते हैं कि ''उसने बाइबल के समयों में आश्चर्यकर्म किए; यदि वह आज भी वही है, तो उसे आज भी आश्चर्यकर्म करने चाहिए।'' यह गलत तर्क है क्योंकि वचन हमें केवल यह बताता है कि वह आज उसी स्वभाव वाला वही *व्यक्ति* है। हमारी भलाई के लिए उसकी वही इच्छा है और हमारी आत्माओं की रक्षा के लिए उसमें वही सामर्थ है। यह बात किसी भी प्रकार से यह संकेत नहीं देती है कि वह वैसे ही काम करता है जैसे पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान करता था।

क्या यीशु अब कुछ मछलियां और रोटियां लेकर तुरन्त संसार के लाखों भूखे लोगों का पेट भरने के लिए उन्हें भोज में बदल देता है? (देखें मत्ती 14:15-21; मरकुस 6:34-44; यूहन्ना 6:5-13.) क्या वह अब क्षण में जल को दाखरस में बदल देता है (यूहन्ना 2:1-10)? क्या वह आज केवल बोलकर मिट्टी में से लोगों को बना देता है (उत्पत्ति 2:7)? क्या वह लोगों को मुर्दों में से जिलाता है? (देखें लूका 7:11-15; 8:49-55.) स्पष्टतया यीशु आज बिल्कुल वैसे नहीं करता है जैसे पृथ्वी पर रहने के समय करता था।

सच्ची शिक्षा पर विश्वास करने की जिम्मेदारी हर किसी की है (13:9)

हर मसीही की जिम्मेदारी अपना मन विश्वास में बनाए रखने की है। इब्रानी लोग उन शिक्षाओं को सुन रहे होंगे जो उन्हें बहुत हानि पहुंचा सकती थीं। झूठी शिक्षा देने वालों को श्राप दिया जाएगा (गलातियों 1:8, 9), परन्तु परमेश्वर के वचन के प्रकाश में हर नई शिक्षा को परखने का काम सुनने वाले का है (प्रेरितों 17:11; देखें 2 तीमुथियुस 2:15)। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हम ''अनुग्रह से दृढ़'' नहीं रह पाएंगे (आयत 9)। आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए यह एक आवश्यकता है। वचन को सीखना हमारा कर्त्तव्य है ताकि हम बढ़ सकें और भटक न जाएं (1 पतरस 2:1-3; 2 पतरस 3:18)।

संगति (13:9)

पतरस अन्यजातियों के साथ खाता रहा था जब तक कुछ यहूदीवादी यरूशलेम से नहीं आए थे, और फिर वह उन से पीछे हट गया था। पौलुस ने कहा कि वह इस कपट के कारण दोषी ठहरा था (गलातियों 2:11–21)। केवल ''शुद्ध'' भोजन खाने का विचार यहूदी शिक्षा में इतना गहरा था कि पतरस को मालूम था कि उसके व्यवहार से उसके भाइयों को धक्का लगेगा; कुरनेलियुस के मन परिवर्तन के बाद से वे अन्यजातियों में नहीं गए थे (प्रेरितों 10:1–11:18)। पौलुस ने देखा कि नये अन्यजाति मसीही लोगों के लिए पतरस का व्यवहार कितना खतरनाक हो सकता है, सो उसने पतरस को समझौता करने के कारण कड़ाई से डांटा। यदि दृढ़ रहा होता तो इन यहूदीवादियों को रोकने में उसका ज़बर्दस्त प्रभाव हो सकता था। उन्होंने कहा होगा, ''यदि प्रभु का प्रमुख प्रवक्ता पतरस, अब 'अशुद्ध' भोजन खाता है और वह भी अन्यजातियों के साथ, तो शायद हमें भी बदलना होगा।'' 9:10 में हम पढ़ते हैं कि खाने पीने के नियम केवल ''सुधार के समय तक के लिए'' प्रभावी थे। कलीसिया में यहूदियों के लिए वह समय आ गया था।

ऐसे समय हो सकते हैं जिसमें धीरे धीरे चलना आवश्यक हो और ऐसे समय भी हो सकते हैं जब अपने भाइयों के प्राणों के लिए ऐसा करना आवश्यक हो। नये मसीही लोग ठोकर खाकर गिर सकते है, जबकि परिपक्व हो चुके लोगों के लिए गिरना कम सम्भव हो जाता है। हमें नये मसीही लोगों के साथ संगति करने और उनके साथ भोजन साझा करने का विशेष प्रयास करना चाहिए। इकट्ठे भोजन करना पूर्ण संगति और स्वीकृति का पुराना प्रतीक रहा है।

''[हमारे] होठों का फल'' से तात्पर्य (13:15)

परमेश्वर की स्तुति का हमारा बलिदान ''होठों का फल'' है (आयत 15)। मानवीय ''होंठों'' से निकलने वाली बातें हृदय में से आती हैं; यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे मनुष्य के बजाय मशीनी साज से व्यक्त किया जा सके। बहुत से लोग दावा कर रहे हैं कि परमेश्वर ने उन्हें तोड़े दिए हैं जिनका इस्तेमाल उसकी महिमा करने में किया जाना आवश्यक है। अपना ''तोड़ा'' (परमेश्वर द्वारा दिया हो या स्वाभाविक रूप में विकसित हुआ हो) दिखाने का खतरा अपनी बढ़ाई करने की प्रवृति है। मसीह की देह के सभी अंगों को केवल परमेश्वर की महिमा के लिए ही नहीं बल्कि ''एक दूसरे को सिखाने और चिताने'' के लिए भी गाने को कहा गया है (कुलुस्सियों 3:16)। यह ''होठों का फल'' सब मसीही लोगों की ओर से होता है न कि कुछ चुनिंदा लोगों की ओर से।

ये दो आयतें हर मसीही को परमेश्वर के सामने स्तुति का बलिदान चढ़ाने की आज्ञा देती हैं। इफिसियों और कुलुस्सियों की आयतों का अर्थ निश्चित तौर पर मण्डली का गायन है जिसमें बढ़िया गायक हों या घटिया सब को गाते हुए भाग लेने की आज्ञा है। सामूहिक आराधना में ''हम'' (आयत 15) होना चाहिए और इसमें ''[हमारे] होठों का फल'' दिया जाना आवश्यक है।

मसीही व्यक्ति का बलिदान (13:15, 16)

इब्रानियों की पुस्तक जोरदार ढंग से बताती है कि मूसा की व्यवस्था के बलिदान की अब आवश्यकता नहीं है। पुराना सिस्टम अब खत्म हो गया है। यह मनुष्य को सचमुच में कभी परमेश्वर के पास नहीं ला सकता था, क्योंकि यह पूरी तरह से पाप क्षमा नहीं कर सकता था। नई

वाचा के अधीन दिए जाने वाले बलिदान परमेश्वर और मसीह की महिमा के रूप में दिए जाते हैं। हमारी पूरी आराधना अपने प्रभु मसीह यीशु के द्वारा होती है यानी हम परमेश्वर तक केवल उसी नाम के द्वारा पहुंच सकते हैं। हर गीत या प्रार्थना में चाहे हम स्पष्ट करें या न, परन्तु हमें इस बात को समझना आवश्यक है कि हम उसके "नाम" से बंधे हैं, जिसका अर्थ है कि हम उसके अधिकार से चलते हैं (कुलुस्सियों 3:17)।

मसीही लोगों को निर्देश दि गया है, "हम ... स्तुति रूपी *बलिदान* अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें" (आयत 15)। परन्तु भक्तिहीन लोग परमेश्वर को धन्यवाद नहीं देते हैं (पढ़ें रोमियों 1:21)। नास्तिक की हालत कितनी तरसयोग्य है जो जीवन में आशिषें तो पाता है परन्तु किसी को धन्यवाद नहीं दे सकता! धन्यवाद और स्तुति से हमारे जीवनों में फल आता है।

मसीही व्यक्ति के लिए दूसरों के साथ "बांटने" में शामिल होना कर्त्तव्य है, क्योंकि आयत 16 में *koinonia* का यही विचार है। हमें धार्मिक सेवा के काम करने की इच्छा से भरे होना आवश्यक है जो "जीवित बलिदानों" में बनती है (पढ़ें रोमियों 12:1, 2)। हमारे पाठ की आयत 16 के अनुसार भलाई करना भी एक "बलिदान" भी है।

हमारे सब बलिदानों में से शायद सबसे बड़ा बलिदान जरूरतमंदों की सहायता के लिए करुणा और प्रेम से किया गया कार्य है। याकूब ने सुझाव दिया कि "हमारे परमेश्वर पिता की नज़र में बेदाग और निर्दोष धर्म अनाथों और विधवाओं की उनकी परेशानी में सहायता के लिए जाना और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखना है" (याकूब 1:27; NEB)। NRSV में "अनाथों और विधवाओं की परेशानी में उनकी देखभाल करना और स्वयं को संसार से बेदाग रखना।" ऐसा बलिदान करते हुए हम मसीह का अनुकरण कर रहे होते हैं जो भलाई करता गया (प्रेरितों 10:38)। यह वह परख है जिसके द्वारा हमारा न्याय होगा (मत्ती 25:34–46)। हमारे भले काम राजसी याजकाई के रूप में दिए जाने वाले हमारे "आत्मिक बलिदानों" का भाग हैं (1 पतरस 2:5)।

प्राचीनों का क्या काम है? (13:17)

प्राचीन स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर द्वारा ठहराया गया अधिकार हैं। प्राचीनों की स्थिति को बदनाम और कलंकित कर दिया गया है जब कि कुछ मण्डलियों में प्राचीनों को "यहोवाह यूं कहता है" के लिए कोई सम्मान न रखने वाले केवल वोटों पर नज़र रखने वाले प्राचीन बन जाते हैं। जहां पर परमेश्वर के वचन में उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए हैं वहां परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की जवाबदेही उन्हीं की है।

प्राचीनों का काम उद्धार पाए हुओं को बचाए रखना है। आत्मओं की सम्भाल करना प्राचीनों का मुख्य और प्रेरितों का सहायक कार्य था। लगता है कि थोड़ी देर के लिए प्रेरितों ने प्राचीनों और डीकनों का काम किया, परन्तु कुछ काम योग्य पुरुषों को सौंप दिए गए जिससे स्थानीय नेतृत्व स्थापित हो गया। प्रेरितों 6:1–7 में प्रेरितों ने कलीसिया की गतिविधियों की निगरानी में अपनी सहायता के लिए लोगों को नियुक्त किया ताकि वे और काम कर सकें, जैसा कि वचन का प्रचार करते रहने का काम। (प्रेरित लोग सुसमाचार सुनाने वाले यानी इवैंजलिस्ट भी थे।) कलीसिया

द्वारा चुने गए सात पुरुषों को प्रेरितों द्वारा सेवा के काम के लिए ठहरा दिया गया था। निश्चय ही यह इस बात का नमूना बन गया कि प्राचीनों को क्या करना चाहिए: उन्हें प्राणों की देखभाल और दूसरों से परेशान और भूखे लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे काम करवाने चाहिए।

प्राचीनों को अपने अधीन सदस्यों को समझाने का कार्य दिया गया है, चाहे वह सिखाकर हो या यह दिखाकर कि इसे सही ढंग से कैसे किया जाता है (1 तीमुथियुस 5:17)। यदि उनका काम हमें सिखाना है तो हमें उनकी शिक्षा को मानना आवश्यक है। शासन करना उनका कर्त्तव्य है और हमारा कर्त्तव्य उस शासन की अधीनता को मानना है।[61]

प्राचीनों के प्रति हमारा सम्मान कलीसिया की उनकी सेवा के कारण होना चाहिए, न कि केवल उस "पद" के कारण जो उन्हें मिला है।[62] हमें "उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य" समझना चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 5:12, 13)। उनकी ज़िम्मेदारी बड़ी भारी है जिसमें कलीसिया के खतरों की चेतावनी और फूट या बेदीनी यानी विश्वासत्याग से रोकने की चेतावनी शामिल है।

क्या एक प्राचीन होना उचित है? (13:17)

"प्राचीन," "प्रैसबिटर," "निगरान," "रखवाला," और "पास्टर या पासबान" नये नियम की कलीसिया में एक ही पद के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द हैं। आज भी यही होना चाहिए। एक ही "पास्टर या पासबान" वाली कलीसियाएं मनुष्य की परम्परागत इच्छा या व्यवहार के पक्ष में बाइबल के अधिकार को नज़रअन्दाज़ कर रही हैं। नये नियम में पास्टरज़ हर जगह बहुवचन में ही आया है (देखें प्रेरितों 14:23; फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 4:14; तीतुस 1:5)। एक तानाशाह चीज़ों को अधिक जल्दी कर सकता है, परन्तु ऐसा प्रबन्ध एक दूसरे के सहायक कई लोगों के निर्णय के प्रबन्ध की अनुमति नहीं देता। मण्डली की अगुआई और रक्षा के लिए एक व्यक्ति में सम्भवतया वैसे निर्णय की समझ नहीं हो सकता जैसा लोगों के समूह में हो सकता है। एक व्यक्ति के पास्टर होने का सिस्टम ईश्वरीय अधिकार का उल्लंघन है क्योंकि नये नियम की कलीसिया में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता।

सुसमाचार प्रचारकों और कलीसिया के लिए प्रार्थना करना (13:20, 21)

पौलुस आम तौर पर कलीसिया को अपने लिए प्रार्थना करने को कहता था। वह कलीसिया की प्रार्थना की सामर्थ में विश्वास रखता था और आम तौर पर भाइयों के लिए भी प्रार्थना करता था।

कलीसिया को वचन के सुनाने वालों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि बहुत से सदस्य अब बाइबल के उन नियमों में स्थिर नहीं हैं जिनमें वे कमी थी वे नौकरी या समाज की खातिर वे समझौता करने की परीक्षा में पड़ जाते हैं। हमें ऐसे प्रचारकों की अत्यधिक आवश्यकता है जो केवल इसलिए सच्चाई को कभी रोकें न कि सुनने वालों को अच्छा नहीं लगता। हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो बाइबल के हर नियम को सिखाने में दृढ़ हो।

इब्रानियों के लिए एक प्रार्थना (13:20, 21)

इब्रानियों की पुस्तक के अन्तिम भाग में पत्री के प्राप्तकर्ताओं के लिए एक प्रार्थना और इसके

पूरे संदेश का सार है। लेखक ने इस बात की समीक्षा की कि मसीही लोगों को क्या होना चाहिए और कैसे होना चाहिए। आयतें 20 और 21 की बात इस भाग में मुख्य है जो यह संकेत देती है कि हमें शान्तिदाता परमेश्वर, भेड़ों के प्रधान रखवाले को हमारे लिए उपलब्ध करवाने देना चाहिए। हो सकता है कि हमें हर बार इसके ढंग की समझ न हो परन्तु हम पीछे मुड़कर अपने साथ होने वाली हर बात में उसके हाथ को देख सकते हैं।

इस प्रक्रिया के बीच में हमें दूसरों की प्रार्थनाओं की इच्छा करनी चाहिए (13:18, 19) क्योंकि यह उससे अधिक महत्वपूर्ण है जितनी हमें समझ है। लेखक ने चाहे अपने कुछ श्रोताओं को ''आत्मिक बालक'' कहा (5:11–14), परन्तु फिर भी उसके लिए उनकी प्रार्थनाओं का महत्व था। हमें किसी की भी प्रार्थना को जो हमारे लिए प्रार्थना करता है कम नहीं आंकना चाहिए।

परमेश्वर के प्रार्थना का उत्तर देने का ढंग मानवीय ज्ञान से परे की बात है, परन्तु हम यकीन के साथ यह मान सकते हैं कि वह उत्तर देता है। ''शान्तिदाता परमेश्वर'' ने ''सनातन वचाचा के लहू के द्वारा'' हमारे लिए उपाय किया है। मनुष्य द्वारा किए गए समझौते (वाचाएं) भुला दी जाएंगी, परन्तु हमारे साथ किया गया परमेश्वर का समझौता सदा तक रहेगा। इस वाचा की गारंटी न केवल मसीह के बहे लहू के द्वारा बल्कि उसके मुर्दों में से जी उठने के द्वारा भी दी गई। ''मसीह में बपतिस्मा'' लेने (गलातियों 3:26, 27) और उसके वफ़ादार बने रहने वालों को अनन्त उद्धार की गारंटी मिली है।

परमेश्वर हमें अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए ''सिद्ध'' करेगा। यहां इस्तेमाल किया गया शब्द ''सिद्ध'' (*teleios*) का अर्थ नहीं देता बल्कि यह *katartizō* है जिसका अर्थ ''टूटी हड्डी जोड़ना ताकि यह बिल्कुल सीधी होकर ठीक हो जाए'' हो सकता है। यह ठीक किया जाना यीशु मसीह के द्वारा होता है न कि हमारी अपनी पहल या शक्ति से। जब हम में वह विश्वास होता है जिसकी हमें आवश्यकता है तो परमेश्वर संसार में अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए हम में और हमारे द्वारा काम करता है (फिलिप्पियों 2:12, 13)।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक प्रभु को उसके लिए जो उसने हमारे लिए किया है और जो कर रहा है प्रशंसा के बोल (''स्तुतिगान'') के बिना खत्म नहीं कर पाया। हमें उसकी प्रशंसा न केवल आशिषें पाने पर बल्कि हर समय करनी चाहिए। फ्लिंट, मिशिगन में जब मैं जवान था उस समय हमारे प्रचारक ह्यूगो आलमण्ड ने बाइबल क्लास में सिखाया था, ''बिना धन्यवाद के परमेश्वर से कभी प्रार्थना मत करो।'' अपनी हर प्रार्थना में पहले धन्यवाद कहकर मैं इसी नियम पर चलने की कोशिश करता हूं।

इस प्रवचन को सह लें (13:22)

''उपदेश की बात'' प्रवचन के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था (देखें प्रेरितों 13:15)। ''उपदेश'' के लिए यहां यूनानी शब्द वही है जो 3:13 में ''समझाते'' के लिए है जहां हमें प्रतिदिन एक-दूसरे के लिए इसे करने को समझाया गया है।

कुछ सबक जो हमें बेहतर जीवन जीने और उच्च सेवा के लिए कहने का आग्रह करने के लिए होते हैं उन्हें सहना कितना कठिन होता है! हमें डांट पसन्द नहीं होती। कई बार हम कह देते हैं, ''मुझे उपदेश मत दो!'' शायद लेखक जानता था कि कुछ पाठकों को लगेगा कि वह उन्हें डांट रहा

है। सो उसने उन्हें धीरज रखने और जो कुछ सिखाया गया था उसे करते रहने की कोशिश करने का आग्रह किया। इब्रानियों की पुस्तक केवल विचार करने के लिए नहीं है बल्कि यह व्यवहार में लाने वाली पुस्तक है। ''इब्रानियों की पुस्तक कार्यवाही के लिए परमेश्वर की तुरही है।''[163]

टिप्पणियां

[1]यह व्याख्या क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 554-56, एन. 45 पर आधारित है। [2]वहीं, 556. [3]*adelphos* (''भाई'') के साथ यह प्रेम *phileo* (स्वाभाविक प्रेम) है। *Agape* आत्म-त्याग वाला, परमेश्वर-सरीखा प्रेम है। यह इतना भी स्वाभाविक नहीं है, क्योंकि यह सिद्धांत पर आधारित है (1 यूहन्ना 4:19)। परन्तु LXX में *phileo* और *agape* का इस्तेमाल कई बार एक दूसरे के स्थान पर हुआ है। [4]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 268. [5]क्लेमेंट ऑफ रोम *एपिस्टल टू द कोरिंथियंस* 10.7; 11.1. [6]''परदेशी उनके दर पर सेवा करने आ सकते हैं पर कैदियों को ढूंढ़ना और उनकी राह देखना आवश्यक है।'' यीशु ने कैदियों का हाल देखने जाने की भी बात की (मत्ती 25:36)। (नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ हिब्रूज़* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976], 247.) उस ज़माने में जेलों में हालत बड़ी ख़तरनाक होती थी। कमरे छोटे, गंदे और शोर शराबे वाले होते थे और उन्हें केवल रोटी और पानी ही दिया जाता था; और जेल की अवधि बिना कारण बढ़ाई जा सकती थी। आरम्भिक पवित्र लोग जेलों में कैदियों की देखभाल के लिए जाकर कैदी होने का जोखिम उठाते थे। इनमें से कुछ परिस्थितियों का वर्णन डब्ल्यू. पिंक, *ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 112 में किया गया है। [7]एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल टु द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री आन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पबिलिशिंग कं., 1964), 392. [8]किसी देश की अदालत यदि ''समलैंगिकता'' को स्वीकार करने का निर्णय ले भी ले, तो भी परमेश्वर की नज़र में कभी स्वीकार्य नहीं होगा। [9]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ हिब्रूज़,* 2रा संस्क. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा 1984), 155. [10]थॉमस हेविट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 206.

[11]ब्रूस, 393, एन. 36. 1 थिस्सलुनीकियों 4:6 देखें जहां *pleonekteo* का अनुवाद ''ठगे'' हुआ है। इसका अर्थ है ''लाभ उठाना'' और इसमें मैथून शामिल हो सकता है। [12]लोभ व्यक्ति को ऐल्डर के रूप में सेवा करने के अयोग्य बना देता है। (देखें 1 तीमुथियुस 3:3; 6:10.) कुलुस्सियों 3:5 में लोभ को ''मूर्तिपूजा'' कहा गया है। [13]ब्रूस, 39. [14]कैन्नथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 23. [15]यूनानी भाषा में दोहरा नकारात्मक देने से बात पर बल बढ़ जाता है। [16]पुराने नियम के किसी भी वचन में यह उद्धरण ज्यों का त्यों नहीं है। परन्तु फिलो *आन द कंफ्यूज़न ऑफ़ टंग्स 32* में इसे इसी रूप में उद्धृत किया गया है। शायद दोनों ने किसी प्रसिद्ध कहावत को उद्धृत किया या LXX के किसी संस्करण का इस्तेमाल किया जो अब उपलब्ध नहीं है। (गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्जेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [मोबर्ली, मिज़ोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992], 236, एन. 13.) [17]पिंक, 1151. [18]वुएस्ट, 234. [19]यूहन्ना 10:27-29 उसकी बात नहीं करता जो हम स्वयं कर सकते हैं; इसका अर्थ है कि कोई दूसरा व्यक्ति हमें प्रभु के हाथ से छीन नहीं सकता है। [20]भजन संहिता 118 यहूदियों का प्रसिद्ध भजन था जिसका इस्तेमाल पर्वों में होता रहता था (गुथरी, 270)।

[21]लाइटफुट, 248. [22]हाबिल की हत्या हुई (11:4), दासों के रूप में इस्राएलियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया (11:25), धर्मियों को मार डाला गया (11:35-38) और यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया गया (12:1-4)। (क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 [न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001], 566.) [23]इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय यूहन्ना यहूदिया से चला गया था। पाठकों को पता नहीं होगा कि उसके साथ क्या होने वाला था चाहे वह अभी जीवित ही था। [24]लाइटफुट, 249. [25]पिंक ने

नये नियम में विश्वास को "भरोसा" (मत्ती 9:22); जो विश्वास किया जाना है (प्रेरितों 14:22; रोमियों 10:8; यहूदा 3); विश्वास के फलों और कामों (1 थिस्सलुनीकियों 3:6; याकूब 2:18); और विश्वास की निष्ठा (मत्ती 23:23; रोमियों 3:3) के चार इस्तेमालों को समझाया है। (पिंक, 1186.) [26]यह वाक्यांश एड्वर्ड फज्ज, *अवर मैन इन हैवन: ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (एथन्स, अलाबामा: सी. ई. आई. पब्लिशिंग कं., 1973) से लिया गया है। [27]प्रकाशितवाक्य 5 और 6 में मोहरों का खुलना इस बात का संकेत है कि परमेश्वर का मेमना अब इसे जानता है। वह भविष्य की बातों का ज्ञान और समझ पाने के योग्य है (5:12)। [28]नये नियम में ऐसी कई चेतावनियां दी गई हैं। देखें रोमियों 16:17, 18; 1 तीमुथियुस 6:20, 21; तीतुस 3:9–11; 2 पतरस 3:16. [29]"डाक्ट्रिन" वैसे ही है जैसे "शिक्षा।" (देखें KJV.) [30]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1982), 257.

[31]पहली सदी की मसीहियत पर यही आपत्ति की जाती थी कि शारीरिक बलिदानों या वेदी के न होने के कारण इसके पास कोई चीज़ नहीं थी। मसीही लोगों के पास कोई दिखाई देने वाला सामान नहीं था जो आम तौर पर अन्य धर्मों में होता है, इस कारण उन पर कोई देवता न होने या नास्तिक होने का आरोप लगाया जाता था। कलीसिया में मन्दिर, वेदी, बलिदानों, याजकों, और कर्मकाण्डों जैसे भौतिक प्रभाव अनावश्यक हैं। हमारा बलिदान उत्तम बलिदान है क्योंकि यह बलिदान मसीह का है। [32]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 489. [33]आयतें 10 से 13 का प्रभु भोज से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। न ही मूल में यूहन्ना 6:51, 53, 54 से कोई सम्बन्ध है, जो मसीह को खाने की बात करता, जो कि "जीवित रोटी" है। ये बातें कहने के बाद यीशु ने ध्यान दिलाया कि "शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं" (यूहन्ना 6:63)। यदि हम सचमुच में मसीह के शरीर को खाएं और उसके वास्तविक लहू को पी लें तो आत्मिक रूप में हमें उससे कोई लाभ नहीं होगा। हम मसीह के मांस को खाकर नहीं, बल्कि उसके वचन को मान कर उसके भागीदार बनते हैं। यूहन्ना 6:53, 54, 63 का यही अर्थ है। "खाने" की बात करते हुए मसीह अपनी शिक्षा के आत्मिक होने की बात कर रहा था; इसे पूरी तरह से "निगलना," "पचाना" और मसीही जीवन का भाग बनाना आवश्यक है। खा कर शारीरिक रूप में खाना व्यक्ति के प्राण को बचाने या नाश करने का काम नहीं करता। [34]ब्रूस, 399–400. [35]पुराने नियम में कुछ लोगों और पशुओं को डेरे के बाहर ले जाया गया था: नादाब और अबीहू के शवों को (लैव्यव्यवस्था 10:4, 5); निन्दा करने वाला जिसे पथराव किया गया था (गिनती 24:14, 23); मरियम जिसे कोढ़ी हो जाने पर सात दिन तक डेरे से बाहर रहना था (गिनती 12:14, 15); और बलि का बकरा (लैव्यव्यवस्था 16:20–22)। [36]पुराने नगर की शहरपनाह उसी जगह नहीं है जहां पहली सदी में होती थी। [37]उसके स्वभाव के बारे में जो जल्द ही "अलोप" हो जाने को था, 8:13 पर टिप्पणियां देखें। [38]ब्रूस, 402. [39]कोस्टर, 577. [40]7:12–14 पर टिप्पणियों की समीक्षा करें।

[41]लाइटफुट, 252. [42]यह शीर्षक रोम के लिए लागू होता है, क्योंकि बहुतों के लिए वह नगर और वैटिकन "कलीसिया" को ही दर्शाता है। बेशक प्रभु की कलीसिया अनन्त है (देखें दानिय्येल 2:44; मत्ती 16:18)। [43]ब्रूस, 404. [44]हेविट, 210. [45]वुएस्ट, 239. भजन लिखने वालों ने इस बात को समझा कि बलिदान मौखिक हो सकते हैं (भजन संहिता 50:14, 23; 51:15–17; 107:22)। [46]रीस, 244. [47]कोस्टर, 572. [48]ब्रूस, 407–8. "जागते" यहेजकेल 3:18–21 की शिक्षा का सुझाव देता है। [49]अंतिम न्याय के समय ऐसी बातें बताई जा सकती हैं पर अनुवादित शब्द "करें" चलते रहने वाले कार्य का संकेत है। [50]देखें रोमियों 15:30; 2 कुरिन्थियों 1:8–11; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 4:3; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1.

[51]रोमियों 15:33; 16:20; देखें 1 कुरिन्थियों 14:33; 2 कुरिन्थियों 13:11; फिलिप्पियों 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23. 2 थिस्सलुनीकियों 3:16 में उसे "शान्ति का प्रभु" कहा गया है। [52]इस पत्री में केवल यहीं पर यीशु को "रखवाला" कहा गया है। यह उद्धरण यशायाह 63:11 से लिया गया है (LXX)। [53]"मुर्दों में से जी उठने" की मुख्य शिक्षा किसी भी दूसरे व्यक्ति के जी उठने के आधार के रूप में यीशु मसीह के पुनरुत्थान को पहले से मान लेती है (6:2)। [54]ब्रूक फॉस वैस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐस्सेस* (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 449. [55]LXX में "आमीन" के लिए शब्द का अनुवाद आम तौर पर *genoito* ("ऐसा ही हो") किया जाता है, परन्तु यह वचन इस बात को दिखाता है कि किस प्रकार इस शब्द का "[इब्रानी भाषा से] लिपयंत्रण यूनानी भाषा में

हुआ और आरम्भिक कलीसिया में इसका इस्तेमाल व्यापक रूप में होने लगा'' (कोस्टर, 574)। [56]2 मक्काबियों और बरनबास की पत्री की अप्रामाणिक पुस्तकों को छोटी पुस्तकें माना जाता था चाहे वे इब्रानियों की पुस्तक से भी बड़ी थीं। इन पुस्तकों के छोटे होने की बात 2 मक्काबियों 22:31, 32; एपिस्टल ऑफ़ बरनाबस 1:5 में लिखी गई है। [57]रेमंड ब्राउन ने कहा कि उसने इसे लगभग तब पढ़ा। (ब्राउन, 270.) [58]लाइटफुट, 255–56, एन. 10. [59]''इटली वाले से'' (NASB; NIV) एक व्याख्या है और रोम से दूर इटली वासियों के जीवन की ओर झुकाव है। [60]देखें रोमियों 16:24; 1 कुरिन्थियों 16:23; 2 कुरिन्थियों 13:14; गलातियों 6:18; इफिसियों 6:24; फिलिप्पियों 4:23; कुलुस्सियों 4:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:28; 2 थिस्सलुनीकियों 3:18; 1 तीमुथियुस 6:21; 2 तीमुथियुस 4:22; तीतुस 3:15; फिलेमोन 25.

[61]मिलिगन, 49. [62]जेम्स थॉम्पसन, द *लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1971), 182. [63]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़ज़ गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 392.